



ओं राधा स्वामी सहाय

अमृत सागर

स्वामी गोविन्द कौल
के
प्रिय भजन

—०—

प्रकाशक :
महेन्द्र नगर आश्रम
सत्संग घर (जम्मू तवी)

भाग IV

प्रथम आवृत्ति
1987

मूल्य :
8/- रु०

मिलने का पता :—

- श्रीनगर : श्री भाल जी काचरू
  बाबा पोरा
  श्री नगर — कश्मीर

- जम्मु : पं० पृथ्वी नाथ दर
  मकान नं 7, महेन्द्र नगर
  कनाल रोड, जम्मु—तवी

- देहली : के० एन कौल
  एफ–21, रत्न पार्क
  शिवाजी मार्ग, नई देहली-१५

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु, गुरुर्देव महेश्वरः ।
गुरु साक्षात् पर ब्रहमः, तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

दो शब्द

आज हमारे परम पूज्य गुरु महाराज जी का शुभ जन्म दिन है, आज का यह शुभ दिन हम सब को मुबारिक हो।

इस शुभ अवसर पर हमें अपार हर्ष है कि हम पाठकों के समक्ष स्वामी जी के भजनों की चतुर्थ पुस्तक प्रस्तुत कर रहे हैं। इस पुस्तक के प्रकाशन में यह ध्यान रखा गया है कि जो भजन पहली तीन पुस्तकों में आ चुके हैं वे इसमें न आवें। केवल नये अप्रकाशित भजन ही इस पुस्तक में दिये गये हैं।

स्वामी जी एक उच्च कोटि के महात्मा तथा योगी थे। जीवन में सादगी के साथ-साथ उनका व्यक्तित्व भक्ति, ज्ञान और योग से ओत-प्रोत था और यह सब उनके भजनों से प्रकट हो जाता है।

स्वामी जी अनुभव को ही बहुत महत्त्व देते थे। उनका मत था कि अनुभव के बिना ज्ञान अधूरा होता है। स्वामी जी ने अपने अनुभव से श्रुति, उपनिषद् आदि शास्त्रों के वाक्यों को मण्डित किया है और साधकों को भी यही प्रेरणा दी कि अपने सच्चिदानन्द स्वरूप को पहचानें। उसको अनुभव में लाने के लिए उन्होंने योग की कई प्रक्रियाओं का वर्णन भी किया है।

स्वामी जी के भजनों में दी गई उच्च कोटि की शिक्षा तथा वैराग्य और भक्ति साधकों केलिए बहुतही उपयोगी और प्रेरणा-दायक सिद्ध हो सकती है। उनके भावों की पूरी व्याख्या करनेमें हम अपने आपको तुच्छ और असमथ पाते हैं। अतः साधक अपनी क्षमता के अनुसार इस अथाह ज्ञान सागर में डुबकी लगाकर नित्यानन्द का अनुभव स्वयं कर सकते हैं।

यह चतुर्थ पुस्तक हम माता जी श्रीमती कमलावती काचरू की प्रेरणा तथा कृपा से प्रकाशित कर रहे हैं। माताजी स्वामीजी की मुख्य शिष्या तथा स्वयंसिद्ध और अनुभवी होनेके नाते हमसब को भक्ति और साधना द्वारा सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा को अनुभव करने की प्रेरणा देती रहती हैं। यह हमारा सौभाग्य है और इसके लिए हम उनके सदैव कृतज्ञ रहेंगे।

इसके अतिरिक्त हम पं० पृथ्वी नाथ जी के भी आभारी हैं जिन्होंने स्वामीजी के उर्दु लिपि में लिखे भजनों के संग्रह को देव-नागरी लिपि में प्रकाशित करने के लिए सौंप कर इस सेवा का अवसर प्रदान किया। इससे देवनागरी जानने वाले भक्तोंको लाभ हो यही हमारी कामना है।

अप्रकाशित भजनों को अलग छांट कर उनका उर्दु लिपि से देवनागरी में लिपिबद्ध कर प्रकाशन हेतु कापी तैयार करना तथा प्रकाशन के प्रबन्ध आदि का सारा कार्य एफ-२१ रत्न पार्क नई दिल्ली-१५ में किया गया।

आशा है भक्त जन इन भजनों के संग्रह सार से अपनी साधना के पथ पर अग्रसर हो के लाभान्वित होंगे।

सावधानी बरतने पर भी यदि भजनों की छपाई आदि में कोई गलती रह गई हो तो पाठकगण इसके लिए क्षमा करें।

गुरु चरणों की सेवा में

एक जिज्ञासु

फाल्गुन शुक्लपक्ष त्रयोदशी

१३ मार्च १९८७

★

अनुक्रमणिका

भजन	पृ० सं०
अस्य आयि शरणे	१
धन दौलत की भेंट	२
गोल्यो मुह अज्ञान	२
दोर कुन	३
बेहोशी मंज़	४
म्यानि जुवो परम शिवो	४
हर मोखय	५
नाद मन्ज़ बेन्द द्रात्र	६
तन फिदा मन फिदा	६
सन्थन हिन्दी	७
मे चानेय लोलि	७
वह यार देता है	८
विघ्न हरण सत गुरन	९
हि जटादारः	१०
दमकुय हमस	१०
आसन दारिथ	१२
"है मुहब्बत"	१३
गुरु दयाल की दया	१४
कीत्य आलम	१५
करय करय तदबीर	१५
पान सोन	१६
लगयो पादन पार	१६
सीत सुमर्ननस	१७
गरहि गरहि सोर	१७
सान्य ज़ोरय	१८
शांत शीतल ज्ञानी सीत	१९
सुरत शब्द अभ्यास	१९
च्येथ भरिय सीत शक्ति	२०
दिल फिदा जु व फिदा	२१
चिय आऽसुख	२१
युगियो उपनिषद् ग्योव	२३
अस्त उदय रोस्त	२४
शिव छुह सोन जुव तय	२५
गोर शब्दय वुज़ान्य	२५
हृदयस थौ सतुक	२६
हृदयस मो थौव राग द्वैष	२७
गरु शब्दस छेऽन छुमा	२८
पान्य पानय लोगयो	२८
हृदयस हमसु हियु जाग	२९
अमृत वान्यि बोज़	२९
लालिच कदिर	३०
थौ ऐच्छ पनम्य होश्यार	३१
यलि ज़ाख वोदुथ	३२
लोल हत्यन्ये केरज्येख	३४
सपुद मंन्जूर नज़र खोश्य	३५
आश्चर छुय सतगोर	३५
अनुग्रह करिन्य चे पूर	३६
लोल आमो दुभारि	३७

भजन	पृ० सं०
श्याम सोन्दर	३८
सोखसान वोथस बेहस शोंगस	३९
भगवान सुन्दय इन्तज़ाम चोपार	३९
बेरिग रंगि रंगि चान्यि चाल	४०
नित्य मुक्त सत् चित् आनन्द	४२
होश फवल पोश गोन्दरय	४२
ओम जोपमयि हम गोलमाय	४४
ओं तत सत करित	४५
ज़िन्द पान मरिथ पान छुख शाह	४६
शब्द मंज़य प्रकट	४७
यस सु पालि तस कुस गालि	४८

भजन	पृ० सं०
दर्शन दि दया कर ही दये	४९
तावन है दुनिया बऽलिये	५०
नरकीय स्वर्गीय कांछि मो वन	५२
पानय पानस चावान सुमय	५३
अनहद शब्दय बोज़	५४
पान दयस युस	५६
आनन्द मस तम्य चावनस	५७
शेव शेव करा। शेवय	५८
वज़ान बीण बाज सुन्दरो	५९
अज़तान कालन कुस त्रोवय	५९
मस कर्य अस्य चानी	६१
सन्त कथा (द्वितीय भाग)	६३

★

□--□

गुरुस्तुतिः

दत्तात्रेय कुलोदभूतं कौल जाति विभूषणम् ।
आफताभ सुतं पूज्यं गोविन्दं नौमि सदगुरुम् ॥
दत्तात्रेय गोत्रस मंज़ युस वोपद्योव, कौल खानदानुक सुय भूषण ।
आफतावकोलनिस पूज्यनीय गोबरस, सदगुरस गोवेन्दस म्योन नम०

विश्वमाल्या त्रियं पुत्रं, शिवभक्ति युतं सदा ।
हरिहरस्यानुजं तं, गोविन्दं नौमि सदगुरुम ॥
विश्वमालि हन्दिस टाठिस गोबरस शिव भक्ति युस ओसुय लोर ।
हरिहर सन्दिस कांसिस बायिस सदगुरस गोवेन्दस म्योन नमस्कार

वनपोह भवं संतम, भक्तानां वरदायकम ।
तपस्विनं जितक्रोधं, गोविन्दं नौमि सदगुरुम ॥
वनपोह किस तस्य संतस, भक्तिन हुन्द युस वर दिनहवोल ।
तस तपस्वियस येम्य क्रुध ज्यूनय सदगुरस गोवेन्दस म्योन नमस्कार

भरतलाल सच्छिष्यं, गुरु सेवा परायणम ।
शिष्यानां ज्ञानदं नाथं, गोविन्दं नौमि सदगुरुम ॥
शिवभरतलालनिस शिष्यस चाटस, गुरु सेवा युस ओस करान ॥
शिष्यन हन्दिस ज्ञान दिनहवालिस सदगुरस गोवेन्दस म्योन नम०

योगेश्वरं महात्मानं, योगशास्त्र विशारदम ।
अज्ञान नाशकं देवं, गोविन्दं नौमि सदगुरुम ॥
योगेश्वरस तस महात्म हस, योगशास्त्र युस ज्ञानान ओस ।
अज्ञानह गटहजुल कासन वालिस, सदगुरस गोवेन्दस म्योन नम०

अहिंसा मार्गगं नित्यं, भक्तानां मार्गदर्शकम ।
वीतराग गुणातीतं, गोविन्दं नौमि सदगुरुम ।।
अहिंसा धर्मस मानन वालिस, भक्तिन हुन्द युस वतह हावुख ।
राग येम्य मशिरोव त सगुणातीतस; सदगुरस गोवेन्दस म्योन नम०

सूर्य तुल्यं प्रभायुक्तं, सोम सम हि सौख्यदम ।
गंगानिभं सदा शुद्धं, गोविन्द नौमि सदगुरुम ।।
सूर्यस हिविस दीप्ति वालिस, चन्द्रमाहस ह्यूव युस सुखदायक ।
गगायि हंद्य पाठय तस नित्य शुद्धस सदगुरस गोवेन्दस म्योन नम०

आसीद वाणी सुधा, स्त्रोतं दयासिन्धुर्मनस्तथा ।
ब्रह्मतेजयुतं सन्तं, गोविन्दं नौमि सदगुरुम ।।
वाणि किञ यस अमृत बुज़न्यव, दयायि हुन्दुय सुय सागर ।
ब्रह्म तेज़-सस्तिस तस्य सन्तस, सदगुरस गोवेन्दस म्योन नम०

स्वामिनश्छत्र छायायां सुखिनः सेवकाः सदा ।
भक्तानां कल्पवृक्षं तं, गोविन्दं नौमि सदगुरुम ।।
स्वामी सञ्ज़ि छत्र छायायितल, सेवक सारिय न्यत सुखहसान ।
भक्तिन हन्दिस तस कल्प वृक्षस, सदगुरस गोवेन्दस म्योन नम०

पुष्पाञ्जलिर्मयार्पितः श्री गोविन्दस्य मस्तके ।
त्रिभुवनेन शास्त्रिणा, श्रीकृष्ण प्रिय सूनना ।।
गोवेन्द कोलस पूज़ा करमय, पोशि दोछह लाज़िमय शेरस तस ।
त्रिभुवन नाथन शास्त्रीयन त्य श्रीकृष्ण सन्दिय टाठय गोबरन ।।

त्रिभुवननाथ शास्त्री
गनपतयार श्रीनगर, (कश्मीर)



श्रीमती कमलावती काचरु



पृथ्वी नाथ पंडित जी

ओम

सच्चिदानन्दह गोवेन्दह निस्पन्दह नमामिहम
चिदानन्दह सदानन्दह परमानन्दह नमामिहम
दीनबन्दह दयास्यन्दह निर्द्वन्दह नमामिहम
सानि जुवह सदाशिवह गोवेन्दह नमामिहम

अस्य आयि शरणे

अस्य आयि शरणे पूज़ा करने, ज़ानिथ च्येई ओमकार छिय ।
सासह बद्य प्राणाम गुल्य गन्डि गण्डी, दंडवत बारम्बार छिय ।।

सर्वज्ञ अन्तर्यामी दीवय, चानी ब सीवय चरणारब्यन्द ।
कूटानहकूट अथ चानिस स्वरूपस, सनिय नमस्कार छिय ।।

सासह बद्य ब्रह्मा वेशिण महेश्वर, देवी त देवता मुनीश्वर ।
इस्तादह शरण तल डेडि चाने, लछि बद्य संत अवतार छिय ।।

विज्ञानह सागर मंज़ च्येई ईरन, फोकह डून्ग हिव्य कयीत ब्रह्मांडई ।
इन्दर चन्द्र सिरिये यमई, कात्या बेशुमार छिय ।।

ऋषि मुनि देवता त कारण, सारिय छि धारन चोनुय ध्यान ।
ज़ानिथ मानिथ च्यह पननुय जुवय, निर्गुण निराकार छिय ।।

अपरम्पार छय चानिय लीला, क्या ह्यकह त्वता कर्यथई बो ।
शरमन्दह सारिय शरख्यथ गामत्य, व्यास आदि बड्य भाशकार छिय ।

च्वशवय बीदई ही नेति शुदय, उपनीशदई छि च्येई ललवान ।
गोविन्द चानिय गीतई छुग्यवान, ज़ानिथ च्यह भार्युक सार छुय

●

गिनध्युन छाभा जि़न्दय मरुन ।
दरुन गाश गतसई ।।
कुन्न प्रनुन मरुन हरुन ।
दरुन गाश गतसई ।।
गोविन्द सुय गव दय सुन्द बरुण ।
दरुन गाश गतसई ।।

●

धन दौलत की भेंट

धन दौलत की भेंट न चाहूं मन की भेंट चढ़ाव।
जो कोई अपने मन को धेवे उसे मोहे बतलाव ॥

धन तन दिया तो दिया नहीं कुछ इन से काम न मेरा।
जो मन सिर चरण कमल में लाये वह सच्चा है चहरा।

धन नहीं दो तुम तन नहीं दो, तुम निज मन चरण में लाना।
वह सब से है प्यारा मुझ को, सब में चतुर सयाना ॥

उस के मन में रहता हूं मैं वह मेरा आस्थाना ।
स्वर्ग लोक वैकुण्ठ लोक में मेरा नहीं ठिकाना ॥

राधा स्वामी सतुगुरु पूरे प्रेम का पन्थ चलाया।
और जितन को मिथ्या जाना प्रेम को सार बताया॥

★

गोलयो मुह अज्ञान

गोलयो मुह अज्ञान फोलयो हृदय ।
चोलयो फरटि फरटि गोविन्दो हो ॥

दोशव्यय छि परदय दरदि वीनभ्य ।
गाश तै गटि गोविन्दो हो ॥

व्येम जोन सोरीय पान ह्यथ शिव ।
सुय गौब बटि गोविन्दो हो ॥

परमानि पननुय सुय सरि करि ।
पोशति बटि गोबिन्दो हो ॥

शाहन हयति बा तोल तोलय ।
मोखतैय रटि गोविन्दो हो ॥

कन थाव शोब्दस मन प्राणेय ।
रट एकिवट गोविन्दो हो ॥

भखत्यों पानस्य दित्य प्रणाम ।
गछ मो खोत्य गोविन्दो हो ॥

करान करिनावान सय छु पाणय ।
चेय नो केन्ह रटि गोविन्दो हो ॥

गाफिल गोर रोस्त यिम ग्रासन ।
वनन छिय खोति गोविन्दो हो ॥

सरि सोबूत येलि ग्रथि इयिव ।
तेलि तुलति वोटिह गोविन्दो हो ॥

★

दोर कुन्न

दोर कुन्न छौर कुन्न व्यचोर कुन्न ।
कुन्य द्राव रोवय दौगन्यार हो ॥

ग्रौर कुन्न योर कुन्न वुच्छ चोगार कुन्न ।
दोन कुन्न करुन पान्यन्यार हो ॥

सन्तो पान्यि तेस कुन्न ।
यति शिन्या सेवाकार हो ॥

ज़ान कर ध्यान्यि छुय कौर कुन्न ।
दौन करुन कुन्न पान्यन्यार हो ॥

स्वप्नस जागरथ जागरेच स्वप्नय ।
मन्ज सुशफतिय होशयार हो ॥
त्रेशविन अवस्थायन कर कुन्न ।
थलि थलि गोविन्द चोनय प्योर हो ॥

★

बेहोशी मंज

बेहोशी मन्ज होश आसुन होश बेहोशीय बनुन ।
छोपि कथ मन्ज मन्ज कथनय किच्छ खामोशी बनुन ॥
स्वप्नस जागरत करनुय जागरेच मन्ज वुछ स्वपुनय ।
स्वप्न जागरत कुन बननय, अथ हालच मन्च अपुन ॥
गुजरिह दम अथ यादसी मन्ज यस, सु गनिरावि दोह त रात ।
गोरय वनान दुख गछियो न्विरथ गोविन्दो कथि चि व त ॥

★

म्यानि जुवो परम शिवो

म्यानि जुवो परम शिवो — सत चित आमन्द गुणो ।

देशकाल रस्तयो रस पूर्ण शुभि स्वस्तयो दर्शन दिति अस्तयो ।
सत चित......
हो सदा शिव लगेय विज्ञान रवि लगेय च्येन गीत गेविह ।
सत चित......
थलि थलि छ्ख च दय असति भांति प्रिय रूपय भवनय जय जय
जय । सत चित......

आश्चर छुव च आश्चर आवांग मनस्गोचर कीतय गय ह्यथ शर ।
सत चित......

वेद त उपनिषदय ललिवान चेय नित्य शुद्धय वन्दयो चेय जुवय ।
सत चित......

ह्री शिव चानि सतीआय टिकि आनन्द बुन्दय नेगलिथ छ़ुहक ब्रह्मांडय
सत चित......

वुथि छ़ुख च सुन्दर प्रथ गुनन्यि अन्दर परमात्मा च ईश्वर ।
सत चित......

अन्दरिय ब तन लागय होश दिम चेय भु जागय बोजतम बडि आत्मा
सत चित......

चिय वुछिनाव मेयचिय, चिय चोपार, रोस्त न चेय भुय, भास्तम कास्तम दुय । सत चित......

सरस्वती शरमन्दय, चेय गेवान गोविन्दय अतीत च द्वन्दाद्वन्दय ।
सत चित......

★

हर मोखय

हर मोखय वोनय दिम्यो । शूभिदारह वोनय दिम्यो ।
हर मोखय वोनय दिम्यो । हरिद्वारि वोनय दिम्यो -
टयठिस भगवाणसीय । सर्वशक्तिमानसीय ।
पनिनिस पानसीय । पनणि यारय वोनय दिम्यो ।
नाभि मन्ज छारथीय । हृदयस खारथीय ।
त्रिकुटी दारथीय । ओंकार वोनय दिम्यो ।

★

नाद मंन्ज बेन्द द्राव

नाद मन्ज़ बेन्द द्राव बेन्द मन्ज़ नाद।
जान्य सन्त तै साध गोबिन्दो ॥
बुज़य गाश वजि़ नाद दजि़ प्रमाद ।
प्रथ विज़य बज़य वाद गोबिन्दो ॥
सादस स्वाद यिय दियि स्माध ।
जान्य सन्त तय साध गोविन्दो ॥

तन फिदा मन फिदा

तन फिदा मन फिदा प्राण फिदा हा जुव करतस जान फिदा।
धन दौलत सम्पत्ति गाटजार सर फिदा करतस पान फिदा॥
स्थूल सूक्ष्म कारण अभ्यमान कर्म धम योग ज्ञान फिदा ।
दीव्य गणेश यम त विष्णु ब्रह्मा तस छह सिर्य माहताभान फिदा ॥
ऋषि मुनि योगी सन्त साध, अवतार सारय विद्वान् फिदा।
सत शास्त्र वेद उपनिषद्. शेषनाग छह गेवान फिदा ॥
वर्ण आश्रम कोल त गोत्रय गच्छति भा अभ्यास सान फिदा।
काम क्रोध लोभ मोह अहंकार कर जुव तम देह अभिमान फिदा
गोबिन्द चोन जुव छु य शिवय तस छु य जमीन आस्मानफिदा ॥

पननुय जुव वुछम चोपारय ।
यथि पाठ पोशस मन्ज सुगन्ध बसित ॥
आकाशः वथ अलीफ यारो।
सारसी मन्ज. आस्थिय अन्द बसित ॥

सन्थन हिन्दी

संन्थन हिन्दीय चरण कमल हृदयस धरति भा गोविन्दो ।
संन्थन हिन्दीय चरण सीवभा दर्शन करतभा गोविन्दो ॥
सन्थन सीत नैरतभा फेरतभा रात दोह भरतभा गोविन्दो ।
गुरु रूप न्यथ ईश्वरय मानिथ आत्मा सोरतभा गोविन्दो ॥
संन्थन हुन्दय महिमा गयोतिभा प्रथ जायि तरतिभा गोविन्दो ।
संन्थन हुन्दयन्यि चरनार विन्दनीय पानीय पुशरतभा गोविन्दो ॥
संसार सोरय हा फनाई सादन्य मति मशरतभा गोविन्दो ।
संन्थन हिन्जी नावि मंन्ज विहथी भवसरय तरतिभा गोविन्दो ॥

मे चानेय लोलि

मे चानेय लोलि सप.जम तारि रगनीय
वज़न कियुथ नगारि सेतार व्यन छ़ुम ॥

अमिय न्युत्र मन खि़चित वाह् वाह वज़न छ़ुम ।
छु न्य काँह् साज न्युथ मजदार छोन्य छ़ुम ॥

करुम दर्शुन मे हरशय अम्युक छ़ुम ।
वजन व्यन रात दोह ओंकार धुन छ़ुम ॥

सु सत शब्दय चे सत गोर बोजनाविथ ।
कोर्मुत कस मे सीत अपार पोन्य छ़ुम ॥

लगय सथ गोर पादन वन्दयो जुव ।
करुन मे पादनिय चेय वारह म्योन छ़ुम ॥

वह यार देता है

वह यार देता है यह आवाज, तेरा दिल क्यों हुआ फौलाद।
वह करता रात दिन फरियाद, सुनो बजता है अनहद नाद ।।
कोई सांस खाली मत कर, जपो ओंकार निरन्तर ।
बने चित्त शुद्ध व एकाग्र, मिटे यमथर सिद्ध हो समाध ।।
कमर बांधो हिम्मत के साथ, गुरु के मुहब्बत से ।
सोहबत से फकीरों के जलेंगे सब तुझे अपराध ।।
धरो आसन करो शुद्ध मन, भरो प्रेम से मन प्यारो ।
सुमरो ईश्वर को रात - दिन, करो मालिक को तुम याद ।।
लगा कर तीन बिन्द अन्दर, मधुर मुरली मनोहर ।
हटेगा डर बने मन स्थिर त्रिकुटी पर से सुन फरियाद ।।
तमाशा देख कर नजारय अजायब घर तेरे अन्दर ।
मन्दिर शिव का बहुत सुन्दर, वह शिव शंकर है अगाध ।।
पुकारता है तुझे वह यार, अरे गाफिल हो होशियार ।
गिरफतार किस लिए तुम अब पढ़ो सरकार का ईरशाद ।।
पकड़ कर दमबदम दम को ओं या सोऽहम् हमसु ।
जपो गम मन के सब एकदम मिटेंगे फिर रहो दिलशाद ।।
गोबिन्द भ्रमजाल को तोड़, सकल संकल्प मन से छोड़ ।
परमात्मा से मन को जोड़, अगर बनना तुझे आजाद ।।

●

अऽबन पनन्येन कुन वुछति गोबिन्दो ।
एकाग्र कर चित्त बोज त्रावबा मद गोविन्दो ।।

विघ्न हरण सत गुरन

बिघ्न हरन सत गुरन, शिव शक्तिये गच्छ शरन ।
हारिये त्रिपौर सुन्दरीय लागय पोश गोन्दरिये ।
लौल चोनुय छु तारन शिव शक्तिये गच्छ शरन ॥
वर दिम मे कृपा कर ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ।
चोनुय ध्यान छि दारण, शिव......
अन्तर्यामी चिय छुख, सर्वशक्तिमान अथ मंन्ज न शक ।
आनंदघन परिपूर्ण । शिव......
सत् चित् आनंद अमर, अजर चि चिनमात्र ।
चानि ध्यनि पाप शाप हरण । शिव......
वीदव ति वुछ मुचरिथ थ्यर, आवान्ग मन्स अगोचर ।
कीर्ति चेयन छि क्या करन । शिव......
सत् जन साध खयत गैय शर फोरण केन्ह न छुक चिय आश्चर
जान्यिख रिंद: जिन्द मरण । शिव......
जानि पान सोन छुय सीरय कांसि सीत थोव न वैरय ।
तस छिह दीवि वरन । शिव......
आदि शक्ति हिंजीय भक्ति दिवान हो छेय मुक्ति ।
सीन तिहिन्दी च चरण । शिव......
छुक चिय सोनुय आत्मा भोवन्य चेय नमो नमा ।
गोविन्द पान करु सुमरण । शिव......

जुलमातके रोजनवाल्यो नागचि वन छयि खबर ।
किच्छ छेह शकिल नागिच क्या छुह नागस मन्दर ॥

हि जटादार:

ही जटादार: अख कटारव्या, करति वरति कम गच्छि चेय क्या ।
भक्ति वत्सल कृपा निधान, कल्याण ज्ञान सुदरय ।
सर्व शक्तिमनि छम तमा । करति वरति कम गच्छिय चेय क्या ।
आश्चर अजर अमर । ईश्वर जन: ज़र: सोन ।
यीतन्य आर शंकर: कर कृपा । करति वरति कम गच्छि चेय क्या
अन्तर्यामी च भगवान । हान चेयज़ ज़ान गयि चाउन ।
द्राम अरमान सोन च आत्मा । करति वरति कम गच्छि चेय क्या ।
सत चित आनन्द सदाशिव । रिवि क्याज़ि चेय हुय न काँह ।
सीत्र पाद च्पान चेय नमोनमा । करति वरति कम गच्छि चेब क्या ।
अमरीश्वर अथि चेय वर अभय । जय जय जय वोवन्य ।
पावन क्षय भनि कर क्षमा । करति वरति कम गच्छि चे क्या ।
गगा जेटिह् वासुख चे हटि । मटि मटि दिति हतो ।
मटि सोन चें व्रोर करति दया । करति वरति कम गच्छि चेय क्या ।
गोविन्द गच्छति चि ति अर्पन । शिवस वैन्य केह् म जान ।
दुय त्राविथ सुय चिय अमा । करति वरति कम गच्छि चे क्या ।

दमकुय हमस

दमकुय हमस छु बोलान सूहमसू हमसू ।
हमस नादस कन थाविथ बोज ओम शिव शम्भू ॥
सोज़ बोज़ जुवि सोज़ाय सान्य सोज़ खयाल ओन्ट ओन्ट ।
ठुन्ठ त्राविथ छयनजि हतो करजि अयछकन बन्द चोन्ट ॥
बातिथ पूजा गोफि करतो मंज अच्यिथ युस प्रभु ।
हमस नादस कन थाविथ बोज़ ओम शिव शम्भू ॥

छरट त्राव मन जट पट रठ प्राण अपान मिलिनाव ।
सहस्रदलस मन्ज़ केन्चन दोहन करुन ठहराव ।।
ओम शोब्दस कन दारुन तारण यि पानय छुहः ।
हमस नादस कन थाविथ बोज़ ओम शिव शम्भू ।।
मन्जिह खराब बथ छेह येति पकजि तते चि सुनचिथ ।
सोरि रुजिथ सोर वूंजिथ वुच्छ मि ओर योर गच्छि चियत
दिथ कदम ब्रोन्ट पोवन दवन वज़न हु हु ।
हमस नादस कन थाविथ बोज़ ओम शिव शम्भू ।।
अमृत चोन शशकलय बनुन पजि निष्कलय ।
शिन्य मनजीय ह्यनि बूज़िथ शिनि पेय्ठ पख जल जल ।।
चेय है मियुल गच्छि शिवस सीत्य न रहना 'हम' या 'तुम' ।
हमस नादस कन थाविथ बोज़ ओम शिव शम्भू ।।
तीज वुच्छित यऽनि त्रहरख त्राव फ्रेख पख ब्रोन्ट कुन ।
ऋहक प्रनविच नोन क्या वनय इय वुच्छक गच्छि व्यपून ।।
सथ छुः सोरय संत शासतिर यी छि वनान हु ब हु ।
हमस नादस कन थाविथ बोज ओम शिव शम्भू ।।
शिव शक्तिये कुन चे बने कुन वनै यूथ नौन ।
सन गोरन हिन्ज छेह कृपा ह्योत प्रैम अमृत चोन ।।
शिव सोरय ब्योन केन्ह नो शिवस वेन्य छुख ।
हमस नादस कन थाविथ बोज ओम शिव शम्भू ।।
ईश्वर गुरु कृपा यस तस यि अथि आविथ ।
पूरराविथ पान दयस गोविन्द चान नावीय ।।
यिथ तिथि तरहः भवसरसी कासी ऐब कभु ।
हमस नादस कन थाविथ बोज ओम शिव शम्भू ।।

★

आसन दारिथ

आसन दारिथ वासन दूर कर निशि मने ।
शासन शन्य शन्य खार सु हमसु सोर ।।
न्यथ प्रभातस वोथजि टाठ्ये कन थाव वन्य ।
पाद अथि वुथ छल कल त्राविथ छन जिन्दय मर ।।
निष्कल बन पानस व्यन मो जान अख कनय ।
शासन शन्य शन्य खार सु हम सु सोर ।।
वीद ग्यवान गीत चान्य च पूरण आनन्द गणय ।
स्वप्रकाशीय छु ख चिय आश्चर अजर अमर ।।
चित्तमात्र सदाशिव रूप च़ बीज़ मनि कन्य ।
शासन शन्य शन्य खार सू हम सू सोर ।।
सत चित आनन्द कन्द वातित च़ पन पनय ।
विज्ञान सागर बन्द मुक्ति परम दिगम्बरय ।।
अगोचर निर्विकार काँह बीद चेय न मे नय ।
शासन शन्य शन्य खार सू हम सू सोर ।।
शख त्राव लूख वेन्यतन ति क्या आख हन्य ।
निर्लेप चि निर्मल जीवि भाव छल त्राव यमि सन्ज़ थरय ।।
सोरतो पान्य ब्रह्म अभ्यास कर खनय खनय ।
शासन शन्य शन्य खार सू हम सू सोर ।।
समश्य चलराव क्या छु प्रावून गच्छित वनय ।
अस्ति भांति प्रीय रूप पानीय वुच्छ चिय ज़ रह ज़ रय ।।
गथ क्या छि प्रावुन्य कथ प्यठ भि सन्ययास बन्य ।
शासन शन्य शन्य खार सू हम सू सोर ।।
दोह्य अभेद मस छिह कथ गच्छिवो छन्ये ।
खोश रोज सोरय गोबिन्दय अन्दर त नेबर ।।

वेन्य वेन्य थोकरौवथस छुकना बऽन्य मन्दिछन्य ।
शासन शनि शनि खार सू हम सू सोर ॥

"है मुहब्बत"

है मुहब्बत हम को उस मां बाप से ।
सत गुरु ने ही बचाया शाप से ॥

चाहे कहना वे जो खुद हैं क्या ।
फायदा क्या है अनाप शनाप से ।
तीसरे तिल से शुरु कर दो अभ्यास ।
क्या कहूं प्रगटे तुझे सब आप से ॥
खूभ मजा आवे जब शुद्ध होवे मन ।
दिल लगाना है अजपा जाप से ॥
जो सूरत की दार ऊपर फेर दे ।
सुख को पावे शब्द के मिलाप से ॥
जिसने मन को जीत कर जाना है आप ।
वही बचता देख तीनों ताप से ॥

ओं गुरु दयाल की दया से मुझे ।
हो गया गोविन्द का मन शुद्ध पाप से ॥

परदह तुलथी उच्छतन सु दर्दय । मर्द मर्दय मरदानत्ये ।
गाश परदय गऽटि हो परदय । आकाशी मोट हो परदय ।
गोट होठ फोट चोट परदह परदय ।
मर्द मर्दय मरदानत्ये ।

गुरु दयाल की दया

गुरु 'दयाल' की दया अन्तर कपाट खुल गया ।

बजता सुनो नकारा है अब खूब ही उजियारा है ।
दूर हुआ अन्धेरा है देखो जिससे हो देखना ।।

छलांग मार कर चढ़े, गगन ऊपर चले खड़े ।
सत गुरु शरण तहां पड़े, देखो जिससे हो देखना ।।

झट पट प्रगट हुए वह नाथ कहने लगे चलो जी साथ ।
आगे चले पकड़ के हाथ, सतधाम में पहुंचा दिया ।।

ज्योति प्रकाश है अखण्ड ब्रह्माण्ड पिण्ड में प्रचण्ड ।
उसका ही है सब यह घमण्ड मन का जी वाह चला चला ।।

ओम शब्द प्रगट हुआ सब बंद किये चश्म गोश व लभ ।
रब ने नचाया बीच नभ अजब तमाशा हो रहा ।।

सुन सुन के शब्द यार को जाना है सारे सार को ।
जाकर गुरु दरबार को उसने दिया मैंने लिया ।।

चीज क्या अमीरी है, बेहतर मुझे फकीरी है ।
अजब रोशन जमीरी है, मेरी भी थी यही इच्छया ।।

ग्रामी है अनामी है, अन्तर्यामी निष्कामी है ।
पूरण दयालु स्वामी है, सदा अभय नमो नमः ।।

बाहर का बन्द किया जो पट, जपट के चला कपट ।
देखा तुझे घट घट प्रगट झट पट संकट मेरा कट ।।

कृपा सिन्धु तू गुरु कृपा करो मुझे प्रभु ।
सदा अखण्ड श्री शम्भू गोविन्द शरण तेरे पड़ा ।।

कोल्य आलम

कोल्य आलम वुच्छ मेय यारो आलमन मन्ज़ आलमी ।
दिहसय मन्ज़ दिह कोत्या यिम छि चऽनिय वीह हतो ।।
जाग्रत ज़्येन स्वप्न ज़्येन सुषुप्ति ज़्येन बा ज़ुवो ।
चिय ज़्येन तुरयातीत कथय करनेय क्या ज़ुवो ।।
अहं त्राविथ वहं गालिथ ब्रह्म यान्ये चिय पतो ।
गोविन्द कौल च्यानि लोलि मारण छुसय शोलि भो ।।

करय करय तदबीर

करय करय तदबीर हा हाव हाव्य ।
भावी न फेरान जाँह ज़ुवो ।
कलस कनि ति छाव छाविय ।
फेरान न अख पुरका ज़ुवो ।।
क्याह गोय चेय सोरय यि हाव हाव्य ।
भावी न फेरान जाँह ज़ुवो ।।
नल, राम, युधिष्ठर फिरनाव्यि ।
दीश दीश गदायि शाह ज़ुवो ।
पाण्डव ति कहें दोह छेयपि दिवनाव्य ।
भावी न फेराब जाँह ज़ुवो ।।

★

गोविन्द छुय हो सु चोन ज़ुविय ।
परम शिवय वनुख यस ।।
स्वप्न मन्ज़ ति यिनि भीद वोद वोपदय ।
बीद न ज़ानिजि पानस त तस ।।

पान सोन

पान सोन सोरय गोबिन्द छुय हा गोविन्दो ।
छारण यस राथ दिन चि़ सुय हा गोविन्दो ।।
शुब्द सबारयि च़ सपदयोख कोरुथ गगनस सैल ।
सू सू वज़ान चोंपारी हिवुय हा गोविन्दो ।।
सथ गरुवी कथ चेय भावी बथ हा हावय याम ।
यखदमय वुच्छति रावीय दुय हा गोविन्दो ।।

लगयो पादन पार

लगयो पादन पार पारिय ।
सत गुरु धन्य धन्य राधा स्वामी ।
बूंजिम मुरली बाज्य बीनय ।
वज़न धन्य धन्य राधा स्वामी ।।
शुन्यके आस्थान्य खेस्थीय ।
छन छन छन छन राधा स्वामी ।।
ओं ओं रग रग बोलन पान्य ।
रात दोह वेन्य वेन्य राधा स्वामी ।।
पादन सादन चि़य हय जानिथ ।
कोरमख मेय मोन्य राधा स्वामी ।।
कोसूय भव भय भ्रम्ब सोरय ।
पाप तय पोन्य पोन्य राधा स्वामी ।।
गोविन्द आमुत शरनय चेय छुय ।
सत गुरु धन्य धन्य राधा स्वामी ।।

सीत सुमर्नस

सीत सुमर्नस सथगोर ध्यान्स भजनस सीतय रोज़ ।
भजनस सीतय रोज़ ज़ुवो मन प्रान कर लीन ॥
मन प्रान कर लीन ज़ुवो बोज़ुन सुन्दर बीन ।
बोज़ुन सुन्दर बीन ज़ुवो वुच्छतन स्वप्रकाश ॥
वुच्छतन स्वप्रकाश ज़ुवो युस छुय गाशुक गाश ।
युस छुय गाशुक गाश ज़ुवो सथ गरुसी सीत मैल ॥
सथ गुरुसय सीत मैल ज़ुवो सथ शब्दस सीत खेल ।
सथ शब्दस सीत खेल ज़ुवो रेशयो मुनयो बूज़ ॥
रेशयो मुनियो बूज ज़ुवो गोविन्द च्यति बोज़ ।
सीत सुमनस सथ गुरु ध्यानस भजनस सीतय रोज़ ॥

●

गरहि गरहि सोर

गरिह गरिह सोर दयि सुन्द नाव ललिनाव लोलय नाव ।
ललिनाव लोलय नाव ज़ुवो दयसीय पान पुशराव ॥
दयसीय पान पुशराव ज़ुवो दीह संसार मशराव ।
दीह संसार मशराव ज़ुवो परमानन्दी प्राव ॥
परमानन्दी प्राव ज़ुवो सत शब्दस कन थाव ।
सत शब्दस कन थान ज़ुवो गोविन्द बडराव भाव ॥
गरिह गरिह सोर दयि सुन्द नाव ललिनाव लोलय नाव ॥

●

मंन्ज़ लालन लालि लाल हो । अज़ मन्ये दर्शुन दितम ।
जय दया करिविन्य दयाल हो । अज़ मन्ये दर्शुन दितम ।

सान्य ज़ोरय

सान्य जोरि क्या बनि तोरकियन जोरन ।
यीय सथ गोरन ति भोवुय मेय ॥
होश कर दमसी मिलविथ खोरन ।
हर दम सूसू चोव्य मेय ॥
भक्तिवडि बोज़भा वक्तन चोरण । यीय सत......
ओं शब्दस केयत गगनस दोरुन ।
हमसन सोत उडय त्राविय मेय ॥
तोर सु खिचान योर छुम न छोरान । यीय सत......
सुय वुच्छ बस्थि सतबिन पोरन ।
शिन्या गच्छित शिन्य छोवुय मेय ॥
तथ ज़ायि ज़ेव नय बुठ छिनि फोरण । यीय सत......
दामि सु दरयाव चर्यतिभा फोरन ।
सु चन्य दुगन्यार रोवुय मेय ॥
सु कुन छुय मन्थिरन करोरन । यीय सत......
रेह गन्ज़ेयम पनिन्यि शोरण ।
लोलि नारि: सीनय ज़ाजोवीय मेय ॥
यूत करित ति तोति मन छुह न मोरण । यीय सत......
पत वथ गोविन्दः अनजान दोरन ।
दयसीय पान पुशरोवुय मेय ॥
युस यस दारय सुय तस छू होरन ।
यीय सत गोरन ति भोवुय मेय ॥

शांत शीतल ज्ञानि सीत

शान्त शीतल ज्ञान सीत अस्यि वोन गोविन्दो ।
यिम साध छिय दोहे लसवुन्य गोविन्दो ।
नील नभ चन्द्रय शोलन छि सुन्दरय ।
क्यिथ योगन्दरय खस बुन्य गोविन्दो ॥
सायस तल छि लालस सथगोर दयालस ।
छिनि मायायि कालस फसिवुन्य गोबिन्दो ॥
वति ज़ान पोशडलस्य फोलमित छिह् कमलीय ।
सुन्दर तीज़ि ज़लस्य बसिवुन्य गोविन्दो ।

सुरत शब्द अभ्यास

परम कल्यानस दीवुन छीयो सुरत शब्द अभ्यास ।
सत ज्ञयानस दीवुन छीयो सुरत शब्द अभ्यास ।
निर्वानस दीवुन ,, ,, ,, ।
भुव सदरुक जहाज़ ,, ,, ,, ।
युगियन हुन्द राज़ह ,, ,, ,, ।
सत्य लोकुक दरवाजः ,, ,, ,, ।
करवुन रुहस ताजः ,, ,, ,, ।
आसान छीयो सहल ,, ,, ,, ।
करवुन चितस निर्मल ,, ,, ,, ।
निष्कल छुयो मंगल ,, ,, ,, ।
करि युस तसुन्द जीवन सफल ,, ,, ।
उत्तम निर्विघ्न छियो ,, ,, ।
अथ नाव अनमोल रत्न ,, ,, ,, ।

पापन जालवुन अगन छीयो सुरत शब्द अभ्यास
करवुन मनस मगन ,, ,, ,, ।
सार छुयो तार ,, ,, ,, ।
महिमा तम्युक अपार ,, ,, ,, ।
सथ ज्ञयानुक भण्डार ,, ,, ,, ।
गोविन्द चोनुय यार ,, ,, ,, ।

च्येथ भरिय सीत शक्ति पातिय

च्येथ भरिय सीत शक्ति पातिय ।
दय छु दातय सोन्दरो ॥

तस रोस थौमि कॆसि हिन्ज आश ।
ईश्वर छु दातय सोन्दरो ॥

च्यति अनिय गऽटि मंन्ज गाश । दय छु.....
सु सोरज्येन प्रथ प्रभातय । दय छु.....
शर छुय च्येति भि कर वातय । दय छु.....
श्री सत गोर है पारज़ातय । दय छु.....

—✻—

सु लाल लोभ्मो बुम्भि बाल फन्डिथ ।
छन्डिथ सतगोर मेय लोल्य मंन्ज़ ॥
संन्थन हिन्ज़ छम तनाभ गन्डिथ ।
मुर्ख'य मन्डिस मेय कोल्य संन्ज ॥
यीरि तय वसि बोठ खारि पण्डित ।
छन्डिथ सतगोर मेय लोल्य मंन्ज़ ॥

✻

दिल फिदा ज़ुव फिदा

दिल फिदा ज़ुव फिदा सर फिदा ।
कर फिदा तस जानानस्य ॥
पोज़ छुक आशक तिहुन्दय चेय लोल ।
जर जर फिदा कर भगवानस्य ॥
श्याम सुन्दर वुच्छ भा सुबह शामय ।
सर फिदा पननिस पान्सी ॥

—०—

चिय आऽसुख

चिय आऽसुख तय चिय आसख छुख ।
ओं नमो भगवतिय स्वरसती ॥
सथ च्यथ आनन्दय चिय प्रत्येक छुक । ओं नमो......
ऊज छुख तीज़ छुख तीजुक तीज़ छुख ।
सोरय चिय सार चिय आलम चिय छुख ॥
सारिन्य ब्योन छुख चिय कुनी अख छुख । ओं नमो......
चिय स्वतः सिद्ध छुख बड छुक शुद्ध छुख ।
सारस्य मन्ज चिय अनहद छुख ॥
चिय अजपाजप छुख अलोकिक छुख । ओं नमो......
सत छुख चित्त छुख न्यित छुख तोथ छुख ।
चिय पतिम मेय त ब्रुठियम कथ छुख ॥
चिय रहमत छुख अमृत छुख । ओं नमो......
निर्मल छुख निष्कल छुख निश्चल छुख ।
चिय केवल चिय मंगल छुख ॥
भक्त वत्सल त भक्त सहायक छुख । ओं नमो......

चिय श्री चिय आद्य शक्ति छख ।
भगंत भगवथ भक्ति छख ॥
मुक्ति छख मुक्तिदायक छख । ओं नमो......
निर्भय निर्विकार छख ।
निर्द्वन्द्व निराधार छख ॥
ओंकार छख ओंकार चमक छख । ओं नमो......
पराशक्ति मध्यमा छख ।
वैखरी छख ति शारिका छख ॥
चिय रागण्या माज भक्ति रक्षक छख । ओं नमो......
सारनुय हिन्ज चि आत्मा छख ॥
चिय वैष्णवी शिव त ब्रह्म छख ॥
ओमा छख माता दीव आदक छख । ओं नमो......
हिमसासन छख टाठय बासन छख ।
दर्शन संकठ कासन छख ॥
मनि भासन छख रछिविन सीवक छख । ओं नमो......
चिय सिद्ध लक्ष्मी नारायण छख ।
आनन्दघन परिपूरण छख ॥
चियत बोध मन सारचिय प्रेरक छख । ओं नमो......
सर्व आत्मा चिय परमात्मा छख ।
धर्म पनन्ये धर्मातमा छख ॥
सदा छख चिय सर्वव्यापक छख । ओं नमो......
सत धाम छख चिय अनाम छख ।
सान्यि हृद्युक आराम छख ॥
सतनास छख सत शबदिच कर्ख छख । ओं नमो......
चिय राजहः योगी चिय पूरख छख ।
चिय प्राणायाम तीजिह गर्ख छख ॥
चिय रीच्यख छख चिय कुम्भक छख । ओं नमो......

मोखस प्येट चिय मंन्ज वोन्दस छख।
थावान मन्ज़ आनन्दस छख ॥
गोविन्दस चिय करिथ डख छख । ओं नमो.....

चिय अनहद्‌नाद छख गोर प्रसाद छख।
चिय सन्त सतजन चिय साद छख॥
अगम अगाध छख चिय अलख छख। ओं नमो.....

युगियो उपनिषद् ग्योव

युगियो उपनिषद् ग्योव नादः बेन्द ।
ध्यान्सी मंन्ज़ रुज़थीय बोज़ सुन्दरो ॥
नेबरि अन्दर त्रावथी बोज़ सु छन्द ।
पानस्य मंन्ज़ रुज़थीय बोज़ सुन्दरो ॥
चिय आऽसुख छख ति आसख अन्दः बेन्द ।
ज्ञानस्य मंन्ज़ रुजथय बोज़ सुन्दरो ॥
सारस्य मन्ज़ी चे मन्ज़ी मंन्ज़ गोविन्द ।
थानसीय मंन्ज़ रुज़थीय बोज़ सुन्दरो ।

अर्पन बन मन्ह प्रानह सुन्दरो ।
सोर भगवानः भगवानः सुन्दरो ॥
सुभहस शामस प्रथ प्रभातस ।
सुय अमृत चेह अर्द रातस ॥
दातस हेयलि हरगाह चे बनि सुन्दरो ।
सोर भगवानः भगबानः सुन्दरो ॥

★

अस्त उदय रोस्त

अस्त उदय रोस्त रव हो ।
परम शिव हो टुठ यस ।
गुरु शब्द गाश आमो ।
गाशी सीत हृदय फोलुम ॥
अस्त उदय रोस्त रविय ।
परम शिवय जुव च्छु: सोन ॥
सोन जुव क्या सादन्य हुन्द ।
जाह् न यी निश्चय ढोलुम ॥
यीक अनेक छ़ुय अनेक यीक ।
ठीक सुय पान्य दय ॥
करति विवेक वुच्छति अलीख ।
अमिकुय जगडय चलुम ॥
युन न गच्छुन ज़्योन न मरुन ।
ब्रह्म औस सौरूप ॥
व्यचारकुय अोशुद्धि खयेत ।
भवकुय रोगय बौलुम ॥
वेन्द छ़ुय सेन्दय सेंन्द छ़ुय बेंन्दीय ।
हाव भावय रीफ त नाव ॥
अन्द: वन्दय गोविन्दय ।
बन्दि सेन्दसी रोलुम ॥
वुच्छ चोपारय पान पननुय ।
ज्ञान पननुय प्राव पूर ॥
दूर संथन मुह त अज्ञान ।
मे ति सुय हृदयस गलूम ॥

शिव छुह सोन जुव तय

शिव छुह सोन जुव तय सुय उच्छ चौषारय ।
दारनायि आत्म ध्यान धाऽर धाऽर ॥
दर्शन दियुतन्य छय शिवरात ।
भखत्यन हुन्द शिव छुह पारिज़ात ॥
शक्तिपात कोरन्य पनन्यि प्यार । दारनायि......
भक्ति वत्सलनीय निर्मलन्य ।
दया करन्य निष्कलन्य ॥
मंगलन्य दपिथ पननुय यार । दारनायि......
बन्योय च़यति सतगोर प्रसाद ।
वज़नि लोग पाण्य अन्हदनाद ॥
मणि साद मुचरन्य ताऽर । दारनायि......
आत्म सुखः खोति बोड काँह न सुख ।
प्राविथ सुय च़ेय सोर चलिय दुःख ॥
सन्मुख शिव ऊच्छिथ दुख तेय्म हारय । दारनायि......
गोविन्द सुय प्रथ तरफिय वुच्छ ।
दिह अभिमानी सोरुय मुच्छ ॥
तुच्छ संसार असत सत विचार चार । दारनायि......

★

गोर शब्दय बुज़ान्य सोन्दरो

गोर शुब्दय वुज़ान्य सोन्दरो ।
सन्थन्य हुन्द सु खज़ान्य सोन्दरो ॥
तति नो छयन रातरदन्य छुय ।
ब्यम छुय पान्य गराज़ान्य सुन्दरो ॥

त्योथ काँह् सोर नय बीन नय सुर नय ।
शुक्ल वर्न गाश प्रज़्लान्य सुन्दरो ॥
धन्य तस दीसतस सालिकस विश्वासस ।
मंन्ज अभ्यासस सेज़्रानी सोन्दरो ॥

विज्ञनि वनवन छिय बोज़् निवन मन छः बोज़् ।
ज़न छु नूर बिज़्ली ज़्रान्य सोन्दरो ॥
लोलि चा़न्य वेरि गयोवुय मेय क्या सिर ।
मा स ज़ा़न्य अनज़ा़न्य सोन्दरो ॥

गोडह् गछि: बननुय नज़्ारि सु अनुभव ।
अदह: वनि नौ तु प्रोनुय सुन्दरो ॥
अन्तर बाहर गोविन्द सथ गोर ।
चे कर गेयवुय सुय ज़ा़नि सोन्दरो ॥

—०—

हृदयस थौ सतुक राग

हृदयस थौ सतुक राग तेतमि कर सोरुय त्याग ।
तथ मंन्ज बाग तस ज़ाग बज़्न राग सु हम सु ॥

थविथ पच्छ दरिथ यछ अन्दर अच्छ हेरि बोनि नच्छ ।
शरन गच्छ चलिय कच्छ वुच्छ रचि़ रचि़ सु हम सु ॥

न कुन द्रास न कुन चास न ज़्ाँह मुदुस न ज़्ाँह ज़ास ।
चोल तलवास थौव विश्वास बोलन श्वास सु हम सु ॥

गोरय माज़् गोरय मोल गोरय लोल कास्य होल ।
ज़ा़नन बौल गोबिन्द कौल चि़ति बौल सु हम सु ॥

हृदयस मो थौव राग द्वेष बोज़

हृदयस मो थौव राग द्वेष बोज़ ।
गरुनुय हुन्दय उपदेश बोज़ ॥
नेन्दयुक पनुय जानुन मेथिर ।
नेवन्दयुक म ज़ाँह ज़ानुन शेथिर ॥
नेन्दिकिस वुच्छथ खोश गच्छिगच्छुन
नेवन्दिकिस प्यट रुत रुत येच्छुन ॥
नेवन्दिकिस बरुण गच्छि लौल पूर ।
तेऽमसुन्द दोख जल कर चि् दुर ॥
नेन्दिकिस पज़्य मनथ लौल भर ॥
नेन्दिकिस प्येट थोव रिचि्य नज़र ॥
नेन्दिकिस दि आसन आदर ।
योरय नमस्कार करिय ॥
नेनदेयक सुन्दय अहसान छुय ।
त्युथ कांह मेथिर न मान छुय ॥
निन्दियुक छुह ऐबन वावथय ।
"गोरन्य" चे करनिय भावटी ॥
नेन्दयोक पनुन सन्थन न खोर ।
तिम ति तरियक ति पान्य तेरय ॥
युदवय चि छुक संन्तय पौथुर ।
गम्भीर च्यथ बन ज़न सदूर ॥
तेथ्य मन्ज़ भगवथ खोश चि् बोज़ ।
भगवत दयानस्य मन्ज़ चि् रोज़ ॥
नेन्दियुक वुच्छित क्रूद न खसुन ।
संन्थन मन रोज़ान प्रेसन्न ॥

संन्थन तव्य दय छुय बरन ।
तिम कैन्सि प्येट कूद नय करन ॥
गोविन्द संन्थन हुन्द चि़ दास ।
संन्थन हिन्द पाठ खोश चि़ आस ॥

गरु शब्दस छेऽन छुमा

गोर शब्दस छेऽन छुमा । हा सोन्दरो वन छुमा ।
बोज़ रातरदयन छुमा । हा सोन्दरो वन छुमा ।
यस वनान नारायण । सत शास्त्र भगवन ।
आनन्दघन चेय ब्येन छुमा । हा सोन्दरो वन छुमा ।
राच़ दिनसी मंन्ज़ वीर । येग साधान बोज़ सीर ।
काँह गम्भीर युथ वन छुमा । हा सोन्दरो वन छुमा ।

पान्य पानय लोगयो

पान्य पानय लोगयो पान्य ग्रज़ने ।
वोज़ वज़नय बर तथ लोल ओंम सू ॥
क्या मधुरुय अमृत सद्रुय सुय ।
प्राणवय बोज़ प्राणबय बोल ओंम सू ॥
खसि वसि ह्यस रुजिथ शाहन मेन ।
चेन वुपदीश शाहव तोल ओंम सू ॥
रव संदि खुत गाह प्यव गऽटि गयि दूर ।
नूरय नूर रव खत शुहुल ओंम सू ॥
नाद ब्यन्दस सितिन युस रोज़ि ।
सुय बोज़ि "गूब्यन्द" कोल ओंम सू ॥

हृदयस हमसु हियु ज़ाग

हृदयस हमसु हियु ज़ाग ।
छुहः तथ मंन्ज भाग सुन्दर दीबिय ॥
गोरय चरनन चि नैथिरय लाग ।
तीरिथ तिमनी अन्दर दीविय ॥
गोरिय गंगा गोरिय प्रयाग । छुहः तथ ......
मूर्ख न कुयत नहावुन माग ।
केंह छिह चापान चन्दरायुन ॥
दयस रोस्त कर चि सोरुय त्याग । छुहः तथ ......
हृदयस थोव स्तकुय राग ।
तथ अन्दर योग इन्दर दीविय ॥
तिम छान्डन मानसर नाग । छुहः तथ ......
वज़न क्या छुय मनोहर राग ।
खस्थि ब्रह्म इन्दर दीविय ॥
गोविन्द बोज़ चि छिय रित भाग । छुहः तथ ......

—०—

अमृत वान्यि बोज़

अमृत वान्यि बोज़ भवानी छय गेत्रानय कन थाव सुन्दरो ।
बन्दि द्राव द्वन्दिह गन्धि बहार आव आव ज़न्दःपोश फोल वाचय सोन्दरो
चि म्योन बुय चोन वन मि नोव प्रोन
असि मोन ज़ुवुय पज़ि भाव सोन्दरो ।
फोलि राविय आनन्दघनय चिय मन्ज़
भगवन मन ज़न फोलान छाविः सोन्दरो ।

हेच्छिरावि समय कथि थाव कन सोन
ज़न फोल नारि तावि सुन्दरो ।
सोरुय छु: पोज़ चोन व्यचार म्योन
ज़ुत्र तय फोल दयिनावि सोन्दरो ।

लालिच कदिर

लालिच कदिर मुनरुय ज़ाने ।
अनज़निस निशे कन्ये पल ॥
सोनिच कदिर सोनरय ज़ाने ।
खार कोवि जान्य सोन त सरतल ॥
द्वीपिच कदिर पोंपुर ज़ान्ये ।
मच्छ कोवि ज़ान्य पोंपुर गथ ॥
कमलिच कदिर मंभुर ज़ान्ये ।
मोह् कोवि ज़ान्य येमभिरजल ।
पोशन कदिर बुलबुल ज़ान्ये ।
काव कोवि ज़ान्ये पोशदल ॥
ज़ंगलुक कदिर हान्गुल ज़ान्ये ।
नति तस पाथलि वालन खल ॥
सीरयुक कदिर नेत्र वौल ज़ान्ये ।
ओन कोवि ज़ान्ये रातमोगुल ॥
शुर सुन्द कदिर मोल माज्य ज़ान्ये ।
हान्ट कोवि ज़ान्ये डमभ्युक फल ॥
मोखतस कदिर हमस्य ज़ान्ये ।
कोवि ज़ान्य कोकुर तम्युक मौल ॥
साव सुन्द कदिर सादय ज़ान्ये ।
गोविन्द सादय पादय छल ॥

थौ ऐच्छ पनन्य होश्यार

थौ ऐच्छ पनन्य होश्यार । दर्शुन छुः रोज़ रोशन ॥
मुच्रिथ हृदय वुछुम सुय ।
गेन्डिथ मुदय वुछुम सुय ॥
पान्य सु दय वुछुम सुय । दर्शन छुहः ....
उदय गोविय रवय ।
वज़न छुह प्रणव्य ॥
करुण अनुभव्य । दर्शन छुहः ......
अन्दरिम शर्म चलिय ।
सहस्र कमल हा फोल्यि ॥
तीज़स तीज़ रलिय । दर्शन छुहः ......
वज़न छुह् साज़ सन्तूर ।
अनहद बाजेय तम्बूर ॥
प्रथ तरफि नूरय नूर ।। दर्शन छुह ......
अनुग्रह करुण भरपूर ।
ओरय करिख मन्ज़ूर ।
हृदयस गऽटि संपिन दूर । दर्शन छुहः ......
तोरय आव आलव ।
दया कर दयालोव ॥
अस्य क्याज़ि पान ज़ालौ । दर्शन छुह ......
सुय वुच्छन छुसभि तस ।
आलम पनुन वनि भि कस ॥
नन्यि तस बन्ये यस । दर्शन जुह ......
टयोट गोविन्दस ।
वुच्छन छुह मन्ज़ वोन्दस ॥
स्यूल गौ बेन्द सेन्दस । दर्शन छुहः ......

यलि ज़ाख वोदुथ

यलि ज़ाख वोदुथ योर कोर आस ।
पति अकिलि क्यम कोरन्य चे डास ।
योरि यलि गच्छक तेलि गच्छि असुन ।
लुखय वदन रोज़ चिय प्रसन्न ॥
मोच्छि ज़ि बटथि ज़ाख योर कोर आस्त ।
यति योरि अथि हावान चि द्राख ।
यति बनति क्या न्यूथ सीत खाख ।
अनुथ यिय खर्चाविथ ति द्राख ॥
योत यिय्थ वोनुथ सोरुय छुः म्योन ।
पतो न लारय फोतति प्रोन ॥
संसार सोरुय तावन्य ।
सारय गेय अथि हावन्य ॥
रंगि रंगि सोम्बराविथ चेय चीज़ ।
मोहन वलुख क्योथ गोय तमीज़ ॥
काँह नो पकिय सीत वक्तिकार ।
भास्न चिय यिम्य भाय बन्द ति यार ॥
लारय न केंह अफसोस रोस्त ।
अफसोस तस युस यति फोस ॥
पोज़ यार गोविन्द काँह छु नो ।
सारय ठगय अमिख छिः हो ॥
केम चिज़िन्य अमरोवखय ।
मायायि मोह मस चोवुखुय ॥
कष्टी तुलिथ ज़ाख चिय ।
यमि कामि बापत आख चिय ॥

सुय काम करुथो पान चेय ।
डेलज़ेनि पनन्ये ध्यानि च्यिय ॥
छुय वादि कोरमुत याद् कर ।
रात दोह् भगवत नाव सोर ॥
है क्या गोय कोत गयिय चे बोद ।
केम चिज़िन्य खोरय चेय मद ॥
लोकचार यावुन रोज़ि कस ।
कुस रोज़ि गोविन्द कर चि ह्यस ॥
योद आस्तिय लच्छिबेद करोर ।
अख हार वस्यि न सीत तोर ॥
त्रिभ्वनुक राज युद करेख ।
तमि सीत क्या आखिर मरख ॥
तोर क्युत करुथ सामान क्या ।
आखिर मरुन छुय वन ति हा ॥
येम साहिबन सुजुख चि योर ।
करिनाविथ रितन्य सीत चेय दौर ॥
कमि बुथि अचक निशि साहिबस ।
हावख चि तति क्या वनति तस ॥
क्या ह्येथ गच्छख चि वनति तोर ।
वन जान कऽमा करथि योर ॥
विनि छुय समय पायस प्येतो ।
नति पति गच्छक खाली हथो ॥
बाक्य यिमय दम तिम खार रथ्ये ।
खारुख मि गच्छ लोक कथ्येय ॥
ब्रोन्ठय यि गच्छि बोज़ुन यते ।
कुस रूद कस रोज़ुन यते ॥

बिषय रसौ भह्यस करुख ।
कस क्या करुथ पानस फरुख ॥

लूकन अपूज़ पोज़ बनुथ यत्ये ।
खूय पान्य पानस अनूथ यत्ये ॥
तोरिच मि थाव कँह ग्राव चिय ।
यीय वादि त्यि याद थाव चिय ॥

यावुन थि लोकचार रोज़ि नो ।
परिवार घर बार रोज़ि नो ॥
हशमत हकुमथ रोज़ि नो ।
दकि मार मि दोलथ रोज़ि नो ॥

आकल यि ओन्ठ बोज़ि हो ।
काँह चीज यति नो रोज़ि हो ॥
पान कर हवालि तस दयस ।
सदा शिवस मरेतिनज्यस ॥

गोविन्द गोविन्दय सरुन ।
अर्पन पनुन पान तस करुन ॥
गोविन्द थौव चि तसला पूर ।
कोरमुत चिय त्यैम ओन्ठय मन्जूर ॥

●

लोल हत्यन्ये केरज्येख

लोलय हत्यनिय केरज़्येख यतिय सम्खन याम ।
सारयेन संन्थन सादन पादनिय प्रणाम ॥
लोलि यिम तऽरीफ केरहे तिम चेय सारय शूभन्य ।
भक्तो केरव चार चारय तिम चेय सारय शुभन्य ॥

फो़ज़ येमभिरज़ल लोलि च्याने वागन्यि बादाम कुल्य ।
हरणि चष्मन चानन्यि यिम सोरमि टारय शुभन्य ।।
हृदयिक पम्पोश बथरय वति चान्ये दिमयो मीठ ।
लगयो पम्पोश पादन पार पारय शुभन्य ।।

—०—

सपुद मंजूर नज़र खोश्य

सपुद मंजूर नज़र खोश्य दिल खोश्य दिलभर खोश्य ।
सथ बोज़ प्रथ हालि खोश्य सपुद दयाल खोश्य ।।
चेहलि खोश्य सतगोर खोश्य दिल खोश्य ......
वथ हावनम खोश्य कथ बावनम खोश्य ।
मन्थिर खोश्य दिथ गोम वर खोश्य दिल खोश्य......
यि गयि सहज़ समाध खोश्य ज़ानन साध खोश्य ।
अन्दर नयभर खोश्य दिल खोश्य ......
फोल हृदय वुच्छिम सु दय खोश्य नूर खोश्य रोज़ खोश्य ।
खोश खोश कोर खोश्य दिल खोश्य ......
खोश वुच्छय आश्चर खोश्य अन्द वन्द खोश्य गोविन्द खोश्य ।
कुल गोस नादः बेन्द खोश्य दिल खोश्य ......

आश्चर छुय सतगोर धाम सोन्दरो

आश्चर छुय सथ गोर धाम सोन्दरो ।
निर्वानपद गरिह प्रनाम सोन्दरो ।।
संन्थन लग पारय चरन कमलन ।
दन्डवथ कर पाद प्रणाम सोन्दरो ।।

चि. ति छुख बोज़ ऋष्य पुत्रीय साध्य ।
नित्य परम धाम अनाम सोन्दरो ॥

छुय तोरकुय अनुग्रह गोविन्दस ।
तस ति टोठेव शिव शालिग्राम सोन्दरो ।

अनुग्रह करिन्य चे पूर

अनुग्रह करिन्य चे पूर ।
पान्य केरन्य सुय मन्जूर ॥

सम शान्त अमृत चावन्य ।
अथ तरफि दर्शन हावन्य ।

थलि थलि वुच्छुन चि़य सोन्दरय ।
येम वुच्छ सुय योगेन्दरय ॥

सत गोर चेय दीन्य ज्ञानयोग ।
अटल भक्ति ध्यान योग ॥

समतायि रस चेय चेवन्य ।
संसार मंन्ज मोकलावन्य ॥

सदा थविन श्रीमान चेय ।
अन्दर शिव निर्वान चेय ॥

शरीरकिन थोवन्य कुशल ।
चेय्थ शान्त निर्मल अचल ॥

सुरत खस सत धामस्य ।
अगम अलख अनामस्य ॥

लोल आमो दुभारि

लोल आमो दुभारि भारि चोन्य ।
ध्यानय गंगाधारि धारि चोन्य ॥
लोल वोपद्योव गरि खोति गरि ज़यादिः ।
हरदिः वन्दिः बहारि हारः चोन्य ॥
भक्ति वत्सल दर्शुन दिम लोल आम ।
मेति छुयो गमखारि खारि चोन्य ।
गोरमुख आख साखष्यात शिव पान्य ।
हरिमुख चिय हरिद्वारि द्वार चोन्य ।
सारन्यि शर छुख आश्चर चिय ईश्वर ।
महिमा अपरमपारि पार चोन्य ॥
तार भविसरिः मंन्ज़ः अस्ति गोच्छ दिनुय ।
नाव छुय करिनाव तारि तार चोन्य ॥
पोशी कन्य मन ति प्राण पुज़ि लागय ।
अरगय ओंम वोश्वारः चारः चोन्य ॥
करुणा कर ही सत गोर शम्भू ।
मोकलावुम लोकचार चारः चोन्य ॥
दास छुस दासन होर बाज़ि अन्दर ।
अदिः क्याज़ि भक्षनहारि हारि चोन्य ॥
वादि थविथ वादिह पननुय कर पूर ।
गन्ज़रान आय वारि वारि वारि चोन्य ।
गोविन्द ही काशी नाथो बोज़ ।
फोलरिथ वुच्छ गुलज़ार ज़ारय चोन्य ॥
पाऽर लगयो शिव नावस चानिस ।
नाविय अमृत संसार सार चोन्य ॥

चानि अनुग्रहकुय ओमेदवारय छुस ।
छुय अलौकिक दरबार भारि चोन्य ।
पतित गोस पतित पावन चे नाव ।
भखशून्य सरकार कार चोन्य ।।
गोविन्दो लोलिह् गेवस रातरदिन ।
बोज़ान्य होशयार यार चोन्य ।।

★

श्याम सोन्दर

श्याम सोन्दर मन मोहन नारायण नमस्कार ।
शंख चकर: गदाधर पदमावर: श्री श्रीधर: ।।
मनोहर मधुसूदन नारायण नमस्कार ।
सारिन्य लोकन्य हुन्द स्वामी चिय अनामय चिय अगाम्य ।
अन्तर्यामी परिपूर्ण नारायण नमस्कार ।।
सेवन च्येन्यि पम्पोश पादय बोज़न साध मुरलीनाद ।
दिवान दाद छि खेयन: खयन: नारायण नमस्कार ।।
तस सारय: गटि संकट कटि युस चेय सीत गो सटिवटि ।
मोर मुकट गरुडवाहन: नारायण नमस्कार ।।
यस चोन राग तस बडय भाग सासि मुख: शेषनाग ।
अनन्त राग बीद गेवाण नारायण नमस्कार ।।
सनमुख हाव ज़ोतविन तन तनि तन्य सीत मिलिनावतन ।
संन्थन हिन्दय निरन्ज़न्य नारायण नमस्कार ।।
श्री कृष्ण करु प्रसाद हृदयस लाग पनिन पाद ।
चल्येम ब्याद आनन्द घणि नारायण नमस्कार ।।
लागय लोलय तुलसी चरणन तल चेय लक्ष्मी ।
स्वरस्बतिय चेय वनवन नारायण नमस्कार ।।

चि़य माता चि़य पिता चि़य बन्धु चि़य भ्राता ।
चि़य दाता अदि: कस वनह: नारायण नमस्कार ।।
छुस्य मटि तार यमि लटि दर्शुन हाव दिम मटि मटि ।
हटय़ छुय चेव कोस्तभ मणि नारायण नमस्कार ।
यितम लालि दितम डालि रटथ नालि ही दयाल ।
चि़य गोपाल गोवर्धन नारायण नमस्कार ।।
ही मुकुन्द परमानन्द: राम कृष्ण ही गोविन्द ।
दीनन हि़दे जनार्दन नारायण नमस्कार ।।

सोखसान वोथस बेहस शोंगस

सोखसान वोथस बेहस शोंगस ।
नंगस नेन्दिर प्रंगस प्येट ।।
खत चोन वोलुम थोवुम हंगस ।
गेव्युम लोल्य चंगस प्येट ।।
खोच़यन न्य छुस कालि जंगस । नंगस नेन्दिर......
होशय रुज़िव तोह रस संगस ।
ज़ान्यु: कदर सत संगस प्येट ।।
वाकिफ पान्य पननिस रंगस । नंगस नेन्दिर.....

भगवान सुन्दय इन्तज़ाम चोपार

भगवान सुन्दय इन्तज़ाम चोपार ।
यस रच्छि राम तस आराम चोपार ।।
जान माल्यो रोज़ मोज़स प्येठी ।
युथ न तोशक लशकर ति फोज़स प्यठी ।
श्री सत अकाल वोज़ सत नाम चोपार । यस रच्छि......

यस रच्छि सु तस रच्छि तरेटि मंज़य ।
गाश हावयस पननुय गठि मंज़य ।।
बदलि सुय सोरुय इन्तज़ाम चोपार । यस रच्छि......
काल कतिन्येस न रेछ्यस छुह: मारवुन्य ।
अकि जायि बेयि जायि पति सु लारवुन्य ।।
कुनी कथा छि: शहर: गाम चोपार । यस रच्छि......
सारनिय गच्छि चोन तसला दिनुय ।
अस्य मोकलावि कुन्य न युन न गच्छुन ।।
सायस छुय शिवय सालिग्राम चोपार । यस रच्छि......

बेरिंग रंगि रंगि चान्यि चाल

बेरन्गि रंगि रंगि चान्यि चाल ।
छुख बेज़वाल छुख बेमिसाल ।।
प्रेमि सोरि वायान छुस भो ताल ।
रंगि रंगि नोन छुय सुय कुन यार ।।
दूर च़िय करतम मोह जंजाल । छुख बेज़वाल......
कलि वालि ख्योवथस मस की थाल ।
ख्यथ वुय गोसो साखयातकार ।।
सोरुय चिंय छुख वेखतखाल । छुख बेज़वाल......
आद्य दीव रोज़ च़िय मे रख्यपाल ।
कामन त क्रुदन तुल गटिकार ।।
दूर कर अहंकार पथ हेयि काल । छुख बेज़वाल......
आद्य दीव बोज़तो म्योनुय हाल ।
कडतम दिह अभ्यमानूक खार ।।
दूर त्राव मन संकल्पुच माल । छुख बेज़वाल......

चेय सीत गोस भि नालो नाल ।
दुयि जामन द्योतथम नार ।।
कर्मय नाव रटथम चिय भाल । छुख बेज़वाल......
दिन तय रात तय माह् तय साल ।
तस दीवस करु जय जय कार ।।
सारस्य मंन्ज़ शुभवुन छुख नवनिहाल । छुख बेज़वाल......
दूर कर मनि निशि सारय ख्याल ।
न्य तुम न्य हम कुन ज़ान यार ।।
दयोत है प्यालि चोन गोख मुतवाल । छुख बेज़वाल......
प्यठि औस प्योमुत अज्ञान बाल ।
आद्य दीव सोर ज़ोन पननुय यार ।।
दूर चोल यति ल्येद जन ह्येथ शाल । छुख बेजवाल......
त्रियगोणि वोलगिथ शिवस छु साल ।
छयति गो अज्ञान भ्रमबरस नार ।।
चोट त्येम दिहि अभ्यमानुक ज़ाल । छुख बेज़वाल......
गोविन्द दिह् अभ्यमान चिय गाल ।
छयनि कोरमुत छुय पानय यार ।।
पान ज़ान पान्य छुख कालुक काल । छुख बेज़वाल......

●

पनिन बाऽरय पुशराव दयस ।
मशराव पोन्य पाप तिम गेय लयस ।।
खोच़ मि भा पपनस ति रयस ।
साक्य पान्य चाविय मयस ।।
अश्ये मनिनाविय काशि यस ।
प्रनाम दाम पेनामि दियस ।।

●

नित्य मुक्त सत् चित् आनन्द

नित्य मुक्त सत् चित् आनन्द आत्मा मेरा स्वरूप ।
जीव ईश्वर मन बुद्धि व अहंकार हम नहीं ।।
पञ्च भौतिक मायाकारी तम व रज भी हम नहीं ।
आना जाना है नहीं मुझ में न आज़ादी न बन्ध ।।
मन बगेरह का हूं साक्षी और हूं आनन्दकन्द ।
निर्गुण व निर्मल निरन्जन और हूं मैं निष्क्रिय ।।
मोजज़न आनन्द लामहद्दूद सिफ्तों से परे ।
सारे धर्म कर्म से है ज़ात मेरी मासिवा ।।
मिसल आकाश हर जगह पूर्ण हूँ बेचुनवचरा ।
बानी मन से हूँ परे मैं और स्वय प्रकाश हूँ ।।
आदि आखर से मुभरा दायिम व अविनाश हूं ।
एक रस चेतन ब्रह्म हूं दूसरा है ही नहीं ।।
पर है जलते इन्द्रियों के पास आ सकते नहीं ।
लामकान व बेनिशान फिरने व आने से हूँ जुदा ।।
लाशरीख व सर्वव्यापक गम नहीं मुझ में जरा ।
निर्बिकार निर्बिकल्प व अद्वैत हूं निर्द्वन्द्व ।।
वेद गाते थक गये हैं गीत तेरे हे गोविन्द ।।

—०—

होश फवल पोश गोन्दरय

होश फवल पोश गोन्दरय ।
टाठि सानि शाम मोन्दरय ।।
खत वोत चोन लोल प्वोर ।
लोलस्य लोलय म्य ब्वर ।।

आौर लोल योर लोलय ।
फ्वल हृदय च्वल होल्य । होश...

रव रोशन वुच्छनुय ।
गाश यस असि अच्छिन्न ।
रबसय मन्ज़ न अन्धकार ।
निर्मल स निर्विकार । होश...

लोल्य वाल्यन नमस्कार ।
जय जय बारम्बार ।
गोविन्दनुय जुवय ।
सोन्दर परम शिवय । होश...

मंन्ज़ शलोकन रवथ सोज़ ।
सोज़स्य मन्जय रोज़ ॥
दर्शुन कर दय सुन्द ।
वुच्छ पान फवली हृदय । होश...

बायन वनिज़ि सोन लोल ।
मंन्ज़ूरुय लोल वोल ॥
लोल औशद सत्यी ।
रुगी भ्येल कूत्यी । होश...

लोल औशद चोनुय ।
रुग कासि नोव त प्रोनुय ॥
श्री मऽज्य सरस्वती ।
च्यानी करन अस्तुती । होश...

अऽही तभ्यी च्य करय ।
राथ दोह चरा चरय ॥
गूव्यन्दय छु सोन्दर ।
वुछ न्यबर सु छु अन्दर । होश...

ओम जोपमय हम गोलमाय

ओम जोपमय हम गोलमाय ।
अज़ म्य चोलमाय गोसगम ॥

ज्ञान सिरिये गव वुदय ।
हृदय आकाशस्य ॥
प्रेम पम्पोश डल म्य फोलमाय । अज़......

चोवहस सम शान्ति अमृत ।
सत गुरव पनन्यव ।
ज़्यन मरनुक दोद बोलमय । अज़......

डयूठमय प्यठ होश गोशस ।
तोश्ना तमन्ना द्राम ॥
आतम निश्चय ज़ाह न डोलमय । अज़......

ज्ञान गङ्गायि मंन्ज़ श्रान कोर ।
सोर सू हम हम सू ॥
मनि गम भ्रम चो मय । अज़......

चज्यमाय मोहनी तूरय ।
आस क्रय स्यठाह् ॥
भक्ति भावुक दुशाल वोलमय । अज़......

छाज्याव युस हनि हने ।
मन्ज मने बनि आम ॥
गुर चरणन जुव मोलमय । अज़......

बिवीक मक वैराग पर ।
ज़र ज़राय चटिमस ॥
दिहि अभिमान कूल म्य थोलमय । अज़......

वीदन युस ग्यव गूब्यन्द ।
न्यरद्वन्द सोनय सु ज़ुव ॥
ब्यन्द स्यन्दस सूत्य रोलसाय । अज़......

ओं तत सत करित

ओं तत सत करिथ ओंमय सुरतो ।
ज़िन्द्य मरतो मरख न ज़ाह ॥
आदि दीव गणीश ज़ानुन छु परतो ।
ओंमय ज़निथ कर नमस्कार ।
दियी शान्ति कासी डरतो । जिन्दय......
ज़ानतो पननुय पान अमरतो ।
त्रॊविथ दिह अभिमानुक मार ॥
शिब शिव सर्व्यसय मंज चय स्वरतो । ज़िन्दय......
सुय चय सुय चय पानय हरतो ।
जानतो असथ सोर सम्सार ।
सङ्कलप चाने गोमुत खरतो । ज़िन्दय......
ओंमय स्वरतो छुख अजरतो ।
ओंकारय छुय सारिकुय सार ।
तारि सुय च्येय व्यशम्बरतो । ज़िन्दय......
सॊरसय मन्ज़ छुय हरीहरतो ।
त्रॊविथ दुय बुच्छतन यार ।
आनन्द स्वरूप चय दिगम्बरतो । ज़िन्दय......
ज़ानुन आत्मदीव सुय छुय बज़रतो ।
जानुन सुय गव मूलादार ।
अद्वयत बननुक ध्युतन्य बरतो । ज़िन्दय......

ग्वडनकि थान चय ओंमय व्वचरतो।
तलि छुय आदि दीव व्यघ्न हरतार।
सारि कुय यार छुय सुय लम्बूदरतो। ज़िन्दय......
हृदयस मंन्ज़ छुय व्यशीश्वरतो।
लटि लटि ओं स्वर करी पार।
त्यम सुन्द ध्यानय हृदयस दरतो। ज़िन्दय......
ओंम के ध्यानय सूत्य मुचराव बरतो।
वुच्छतन आनन्द निराकार।
तती छु बज़ान ओंमुक स्वरतो। ज़िन्दय......
आदि दीव गनीशन ध्युतनय वरती।
गव्यन्द करतो साक्षात्कार।
सोरुय पानय वुछ आश्चरतो। ज़िन्दय......

ज़िन्द पान मरिथ पान छुख शाह

ओंमय व्यचऽरिथ रठ त्राव शाह।
ज़िन्द पान मरिथ पान छुख शाह।
वहदत खान गच्छि च्वन जामि जम।
जामि जम युस चयि तस्य चलीगम॥
दुइ हुन्द जाम पेराव मो ज़ाह। ज़िन्द......
कलवाल च्युथथम चय प्याल च्वन।
प्याल च्यथ वुछमख प्रथ जायि नोन॥
प्रथ जायि प्योमुत छु चोनुय गाह। ज़िन्द......
पनने पान निशि दुई करस दूर।
मल पानस वोयन अद्वयत सूर॥
कुन रुजिथ पान मरख न जांह। ज़िन्द......

चानि नाव सूत्य ग्वल दिह् अभिमान ।
दूर गव अह्ंकार ज़ोन असि पान ॥
भोज़तस वोञ चय कोर क्या म्य राह् । ज़िन्द......
आनन्द अमृत च्यथ गोख चय ।
रिन्दो यति गलि चय तय बय ॥
यी रोज़ि पथ कुन ती गो शाह् । ज़िन्द......
भ्रमकुय गम ओस सुय गव दूर ।
सऽरिसय मंज़ वुछ नूरुक नूर ॥
मस च्युत यारन कोर वाह् वाह् । ज़िन्द......
मस चाव यारन च्यव भरपूर ।
दूरगव अहंकार रुध मसरूर ॥
कुन रुद पानय वुछि वोञ क्याह् । ज़िन्द......
माया चिय बऽय वननचि छाया ।
कायायि हन्ज़ुय त्राव राया ॥
दिह् अभिमानस च्यू वोञ दाह् । ज़िन्द......
तमहुक चूर छुय नफचस अन्दरय ।
न्यबर त्रऽविथ स्वरुन सुय छय ॥
वुछ कति मेलन छु हू तय हाह् । ज़िन्द......
गऽयिन्द गिन्द रिन्द ज़िन्द पानय ।
ज़िन्द मरिथ छुख शूभानय ॥
ज़िन्दय मूदखो भरख न जाँह् । ज़िन्द......

शब्द मंज़य प्रकट

शब्द मंज़य प्रकट गव सम्सार ।
शब्दय ज़ेन शब्दस गच्छ च पार ॥

बन्ध मुक्ति पर ध्यान आवे ।
पान दयस युस पुशरावे ॥
शब्दय ध्यन तय शब्दय शब ।
शब्दय ज़ल अग्न पवन नभ ।
शब्दय पृथ्वी कन सुय थावे । पान ......
शब्द रूप ही हैं हम और तुम ।
शब्द ही यमपुरी और है यम ॥
शब्दकिनी मनस्य सु पावे । पान......
गगन मण्डल में करे गमन ।
जीत लिया हो जिसने यह मन ॥
सुय दयस हो परज़नावे । पान......
सुन के गोविन्द उसी में हुवा मगन ।
लय हुआ इसमें तन थिर मन ।
रात और दिन आनन्द पावे । पान......

यस सु पालि तस कुस गालि

यस सू पालि तस कुस गालि ।
बोज़ बा मालि सदाशिव ॥

माया काल तसनो डालि ।
यस अथ डालि सदाशिव ॥
लोलय म्य न्यूमस डालि । बोज़......
शब्दचि खसि युस प्यठ तालि ।
ग्यवि सुय तालि सदाशिव ॥
नचि मोचि कचि ब्येह पननी आली । बोज़......

लगय अथ यालि त चालि ।
द्वोख सोन न चालि सदाशिव ।।
गगनसय खसि सुय छाली । बोज़......
गोफि पनने अचि दमालि ।
अमृत वाले सदाशिव ।।
पान हवाल कोरमस माले । बोज़......
दम दम दम युस सम्बाले ।
क्रम पाठय पाले सदाशिव ।।
अजपा ज़फ जपि प्यठ माले । बोज़......
यस सु खारि तस कुस वालि ।
'गुव्यन्द' बालि सदाशिव ।।
पुण्य पापन सुय दय ज़ालि । बोज़......

—०—

दर्शन दि दया कर ही दये

दर्शुन दि दयाकर ही दये ।
मृत्युन्जये नमस्कार ।।
कालस निशि रछ्वुन च़ म्यये ।
नाविथ चोन काल संहार ।।
यिम रछिथ तिम अपमृत्य न मोये । मृत्यनजये...
ही दय कम क्या गछी चेय ।
भक्ति पननी ओरय यार ।।
मंगान गुव्यन्द ब्यथि त ब्यये । मृत्यनजये...
हा गोसानि साने लोल्य ।
स्वन गलि अद बनी कुन्दनहार ।।
च्य रोस्त गूव्यन्द अद क्यालये । मृत्यनजये...

तावन है दुनिया बऽलये

कम गुल बर कऽर मोतनि वावन ।
तावन हेय दुनिया बऽलिये ॥

कम गुल म्यचि मंन्ज़ मिलनावान ।
म्यचि मंन्ज़ सावान बऽलिये ॥
ज़ालनावानय क्याह चालनावान । तावन......

सुय ज़ानि लखति जिगर यस रावान ।
दिल कतरावन बऽलिये ।
होशेमन्दनय मोत बननावन । तावन......

पान वऽऽनी बायन लडनावान ।
कलि चटनावान बऽलिये ॥
क्युथ अशखाश गव कमन यावनन । तावन......

बे आर समयन अथि ख्याऽय कावन ।
दिल छुय रावन बऽलिये ॥
जाम चटनावान पाम च्यवनावान । तावन......

कम्भकरुण आदि कति रुद रावन ।
ह्यस व्यसरावन बऽलिये ।
कालनि तलवार कस न कतराबान । तावन......

अन्द्रुम अन्द्रय छुक ओपरावन ।
अफसूस स्वयावन बऽलिये ।
कुस करि कस ग्राव शरय थावान । तावन......

सऽरी गऽमत्य यति अथ हावान ।
कुस हाल बावन बऽलिये ॥
बडयन वीरन वारव थावान । ताबन......

कीत्या म्वख संसारय हावन ।
छु ब्रह्मरावन बऽलिये ॥
भगवानय तस छुय बचरावन । तावन......

मूह त्राव मूह्य बुथि वुथि द्यावन ।
बाकि बदनावन बऽलिये ॥
दुःख बडरावन कनि छावनावन । तावन......

ख्यवन यिम न आस्य नोज़क पोलावन ।
गोह ख्याव नाबन बऽलिये ॥
त्राहिमाम त्राहे छुय परनावन । तावन......

ज़ोराबार जोर क्याह थ्यकनावान ।
काल कस न पावान बऽलिये ॥
ऋकि सूत्य म्वुलकन अऽस्य चलनावन । तावन...:

यावगी कति रुज़ रुज़ि मा यावुन ।
कन थाव ग्रावन बऽलिये ॥
नफरथ तिहन्ज़य यिम छि तम्बलावन । तावन......

फलिलय मलिलय आस्य मलनावन ।
तन अऽस्य नावन बऽलिये ॥
स्वर्गय हूरन अऽऽस्य तम्बलावन । तावन......

काल विकाल काल कंसि नय थावन ।
ख्यन मशरावन बऽलिये ॥
मोतुन प्याल वन कस न चावन । तावन......

वदनस मंजय छुय वननावन ।
सोज़ बोज़नावन बऽलिये ॥
सान्यन कथन छुखना कन थावन । तावन......

ग्वर उपदीशी छुस याद पावान ।
दम गंजरावन बऽलिये ॥
यिम कन थावन तिमय पावन । तावन......
सथ जन दय सय पान पुशरावन ।
तिम नय रावन बऽलिये ॥
गूऽयन्द मूहुय छु शुख बडरावन । तावन......

नरकीय स्वर्गीय कांसि मो वन

सरस्वती भगवती छय वन वन
नरकी स्वर्गी कंऽसि मो वन ॥
ज़ानि पऽन्य पानय सु नारायण ।
ब्बड छुख गूऽयन्द चय सथज़न ॥
लूकन हन्जि कथि मो थव कन । नरकी......
मन कन वटिथय पख पानस ।
पुशरऽथि पान भगवानस ॥
ध्यानस मंज़य रोज़ शरन । नरकी......
दखिल मो दि दयकार खानस ।
युस युथ सू त्युथ छुय पानस ॥
भगवानस खबर छय हन हन । नरकी......
ध्वन्द्रिम हालच़ तस छि खबर ।
क्याज़ि छुख लागान बेखबर ॥
न्यबरय छठ म छुयना ब्यपन । नरकी......
लेन देन त्राव बोज़ पान म्वकलाव ।
शिव पादनय पान पुशराव ।
राथ दोह ललनाव मन । नरकी......

वोह रूप भगवान चोनुय छुय ।
पज़्ज़ि पऽठय सन्तव मोनुय सुय ॥
ज़ोनुय यिमव तिमय सथ जन। नरकी......
अऽही कर च़ रात्र द्यन ।
शत्रन म्यत्रन त न्यनधिकन ॥
सम्बर्दियन बायन बन्दन । नरकी......
सारिनय 'गूव्यन्द' लोलय बर ।
पजि भाव आदर सतकार कर॥
ईश्वर रूप ज़ऽनिथ ओबनन । नरकी......

—०—

पानय पानस चावान सुमय

कुन करु प्रानस त ध्यानस ।
पानय पानस चावान सु मय ॥
आदि दीव वातिथ छु सऽर्यसय जहानस ।
रिन्दन छु वनान दूर करिव दूय ॥
आदि दीव लगयो ब चऽनिस ध्यानस । पान...
आदि दीव बिहिथ छु प्यठ डालानस ।
आनन्दमस च्यय चावान छुय ।
वहदत खान किस तथ मय खानस । पान...
सुय छुय गालान दिह अभिमानस ।
दुय त्रऽविथ सोरुय छुय सुय ।
रिन्दय छुख वन तस्य जानानस । पान...
सुय छु यति खसान व्यमानस ।
रिन्दय छि गिन्दान शिनि मऽदानस ॥ पान...

रिन्द छि प्यवान ओं किस दानस ।
अद्वयत चोट तिम पाकनावन ॥
युस सू चोट करि सुय न्यर्वानस । पान...
कुन करु पानस त तस नारानस ।
वीदव ग्योवमुत युस पान छुय ॥
तस्य मंन्ज़ मरचय मेल भगवानस । पान...
सु अख त ब अख यी कति ब मानस ।
शिन्या छु फना करन बोय ॥
पानय वुछमो सुय पञ्य पानस । पान...
मस्तान बिहिथ छु अद्वैयत वानस ।
मस पनन्यन छुय चावान ॥
ज़ान करनावान छि यूगस ज्ञानस । पान...
'गूव्यन्द' वन्य द्यू पननिस पानस ।
वन्य दिथ दय सोरय छुय ॥
पान करु अर्पन तस लामकानस । पान...

●

अनहद शब्दय बोज़

आदि शक्ति हुन्द ध्यान करसा च्वपाऽर ।
अनहद शब्द बोज़ मुचराव तोर ।

प्रान युस रटि तय तस्य वज़ि ओंम ।
प्रान छुय करान सु हम सु ।
तस्य सत्य मिलिथ मत इत योर । अनहद...

तथ जायि वऽतिथ छुय वज़ान हू ॥
तन मन किञ स्वर सू हम सू ।

शिव शिव ओंम कुय छु़य वज़ान शोर। अनहद...
स्व प्रकाश रूप अस्यि यार वुछ वोज़।
युस बोजि़ प्रथ वकत ओंम कुय ध्वज़॥
चय़ बय ग्वलि तय सुय ध्यान धोर। अनहद...
प्यठ ब्रह्मांडस ज्योति रूप ज्ञान गाश।
नादव्यन्द अस्यि करि पापन नाश॥
पोंपर्य सिन्ध पऽठय पान तति मोर। अनहद...
पान कर यमि भवसर सरय।
गुनातीत द्राव चोनुय गरय॥
भवसर स्वदरस तरख अपोर। अनहद...
नाम रूप त्रऽविथ छु़ आनन्दमय।
पान प्रज़नऽविथ पानय दय॥
दुयी व्यह् म थव पानस लोर। अनहद...
यार चोन हनि हनि मंन्ज़ छु़ प्रज़लान।
त्रयिग्वनि वोलऽगिथ शिव चोन थान॥
दिह अभिमानच लऽर चय लोर। अनहद...
आदि दीव चोवथस आनन्दमस।
सोरुय चय़ पान कुस मंगि कस॥
छोह द्युत पानस दय द्राव सोर। अनहद...
द्रष्टा छु़ख पान दृश्य म ज़ान पान।
स्वप्न द्रष्टावथ पान चय़ ज़ान॥
स्व प्रकाश द्राव पान असि यलि छोर। अनहद...
ठोठ म्योन आवांग मनस अगूचर।
गूव्यन्द ओंम स्वर जि़न्दय मर॥
मनि मंन्ज़ वनि आव असि यलि गोर। अनहद...

पान दयस युस

पान दयस युस पुशरावे ।
सुय प्रावे तस कँह नु रावे ।।
आनन्द मस तस दय ति चावे ।
पान दयस युस पुशरावे ।।
तीन बन्धों को करदो बन्ध ।
सिरे जाना देख लो आनन्द ।।
ज्योति निरन्जन दिखलावे । पान......
खुद ही प्रान करता है सुहंग ।
सुन तू मुरली बीण और सारंग ।।
अनहद का बाजा बजावे । पान......
प्राण अपान कर ले इकट्ठा ।
जीत राखे इड़ा पिंगला ।।
दशमो द्वार में प्राण चढ़ावे । पान......
उतरेगी अमृत की धारा ।
सून तू घण्टा और सितारा ।।
ओंकार वाणी से सुन जावे । पान......
बेखुदी की जिसने पी भंग ।
सुनेगा वह शङ्ख और मृदंग ।।
मान सरोवर में ज़ो नहावे । पान......
प्राण करता दिन रात सु हम ।
यही माला जाप दूर होवे गम ।।
मन से सङ्कल्पों को हटावे । पान......
भ्रम से साबित होता यह मेला ।
मन ही ने सब कुछ है खेला ।।
मनो राज सब कुछ दिखलावे । पान......

दुई च़ख ज़ख दुय करबा दूर ।
दुय त्राविथ सु हाज़िर हज़ूर ।।
चोपार्य रुफ तस दय हावे । पान......
शम दम से मन को मारे ।
नित्य अनित्य वह ही विचारे ।।
हम तुम का भेद जो मिटावे पान......
आदि दीव च्ये तोरय छनन नाद ।
गूव्यन्द बोज़तो दशमूय नाद ।।
तारि सुय पान चानि नावे । पान......

आनन्द मस तम्य चावनस

आनन्द मस तम्य चोवनस त लोलो ।
गछत शरण सतगुरस त लोलो ।।
चोर वीद तय अर्दाह पुरानय ।
दीवी शीश रात दयन ग्यवानय ।।
शरमन्द गय ग्यवान यस त लोलो । आनन्द...
चय बोय यत्य न रुद पथ छु हेरथ ।
सू हम त्राव छोन सू छुय सथ ।।
नाव छम मन्ज़ कुनिरस त लोलो । आनन्द...
दम रटिथ सोदरस मन्ज़ दयू दम ।
दुरदान तुल सूहमस दिस त्रम ।।
अथि ह्यथ बोठ च़िय खस्त लोलो । आनन्द...
नाभ्यस्थान प्यठ फेर प्रणुवुय व्यचार ।
अष्टदल हृदयस मंन्ज़ कर करार ।।
नेरु कण्ठ प्यठ ब्रह्माण्डस त लोलो । आनन्द...

अनहद मण्डल बोज़ ओं ज़ीर बम ।
छुय वज़ान दम करान सू हम हम ।।
दुय गज्य तथ सुय पानि अस्त लोलो । आनन्द...
च्यत पारदि कर्यायि चन्चल ।
कृपा करथय गयिय न्यर्मल ।
कुशत गोम सीमा बस त लोलो । आनन्द...
तफ बोड राथ दयन अजपाजफ ।
तस चमियो यस नो चमय छु हफ ।।
सुय सोरुय ब्यन्य भीय कस वनि लोलो । आनन्द...
वहदत खान चव म्य मये मारिफत ।
दुय आव यी भावन मेय तम्य कथ ।।
मस्तान मस च्यथ छि मस्त लोलो । आनन्द...
सत चित आनन्द सुय परिपूर्ण ।
ग्यवहा गीथ रुदम न हवास त मन ।।
सुय जानि बनन छु यस त लोलो । आनन्द...
चय सोर ब नति बहानय ।
अमि प्यठ पूज़ा ब न जानय ।।
आबांग मनस गूचरस त लोलो । आनन्द...
अम चोल ती रुध यी ब्रोन्ठ ओस्य ।
भ्रम किन युन गछुन यम संज फास्य ।।
भ्रम चोलुय गूब्यन्दस त लोलो । आनन्द...

शाह शाहय स्वरतन दय शाह अख मो राव राव ।
छया खबर यि शाह नीरिथ फीरिथ आव या नआव ।।
शाहनय सूत्य दोह भर गूब्यन्द शाहसवार ।
स्वशम्नायि मज़य गुरशब्दय वति द्राव ।।

● ● ●

शेव शेव करान शेवय

शेव शेव करान शेवय सपधोस।
शोवय ग्रोस त शेवय रुद ॥

सु म्योन ज़ुव ताय बु तसुन्द ज़ुवय।
ननि तस बनि यस ग्रात्म बोध ॥

'गूव्यन्द' छुय हो सु चोन ज़ुवय।
परम शेवय वोनुख यस ॥

स्वप्न मंन्ज़ तियिन भीद बुद वोपदी।
भीद नो ज़ानिज़ी पानस त तस ॥

●

वज़ान बीण बाज सुन्दरो

ग्रनज़ान क्या ज़ानि यस छुय जान।
वज़ान बीण बाजे सुन्दरो ॥

च़ गुर शब्दय बुछ़क भगवान।
खनिथ मनि वाजि सुन्दरो ॥

मशर सोरुय पुशर तस्य पान।
वज़ान बीन बाजि सुन्दरो ॥

●

ग्रज़तान कालन कुस त्रोवय

ग्रज़ताम कालन कुस त्रोवय।
नाम रूप सम्सार न्यंगलोवय ॥

कलप्यत नाम रूप सम्सारय।
अस्ति भाति प्रय रूप चय सोरय।।
आदार पान च्योन द्रावुय। नाम......

काल व्यकाल छुय काल शह्मार।
ब्रह्माधकन्त ति चऽिनथ लार।।
हार मऽऽन्य सारियय याद थोवुय। नाम......

काल संञ्ज़ सारिनय चामच थर।
रेय प्यठ ब्रह्माहस तान कर नज़र।।
दय सोरयय क्या च्य रोवुय। नाम......

काल छुय क्रूरय महाबली।
काल सुन्द बूज़िथ वीर डली।।
चली न कालस ति कुसन पोवय। नाम......

कालस तिमयय कोरुय ग्रास।
सथ स्वरूपस प्यठ यस छु व्यशवास।
सथ स्वरूपय पननुय याद पोवुय। नाम......

दीश काल रोस्त छुख च शूभायिमान।
प्रऽविथ पनुनय आत्म ज्ञान।।
थर थर रुजय न शर द्रावुय। नाम......

गूव्यन्द छुख अकाल पुरुशिय चय।
स्वप्न वथ काल सम्सार सोरुय।।
दुय त्राव सथस्वरवय भोवय। नाम......

★

मस कर्य अस्य चानी

आनन्दघन परिपूर्ण त लोलो ।
मसकर्य अस्य चानी कुनिरन त लोलो ॥

हनि हनि वज्र दितिमय संज्ञ त चोगञ ।
च़य सोरुय ब्यो नो किथ अस्य सपञ ॥
च़पोर च़य कंह न च्ये छु ब्यन त लोलो । मस...

ओंम सरि अचि अन्दर प्राण युस रटि ।
चटि अकि छटि प्यठ गछि शिनिहचि छटि ॥
अति बलबीर कमकम यीरन त लोलो । मस...

द्रम दिथय सदर मन्ज़ बोठ च़य खार ।
दुरदान तुल अमि मज़य सुय चार ॥
दुरदानय रिंद छि चारण त लोलो । मस...

अनहद मण्डल बोज़ ताज़ताज़ साज़ ।
सार्य दीव ह्यथ यिवन छु तति यन्दराज़ ।
सलाम दिच़ तति यन्द्रन ति लोलो । मस...

अछ रछय तति हो छि तम्बलावान ।
युस तम्बलि तस्य क्युथ हो छु तावन ॥
गछत शरण सत गुरन त लोलो । मस...

साद आज़ाद यस तोरय छनन नाद ।
सरकरि पान युस बोजि़ दशमोयनाद ॥
पत लारण तस कारण ति लोलो । मस...

रस रसय रस लोग म्य रस चवान ।
शशि कलि छुय तति ज़म ज़म वुज़ान ।।
चव यिथुय छिन फेरन त लोलो । मसा...
अष्टस्यज़ पत लार्य लार्य सु व्छान स्योद ।
क्या बकार तस सु छुना सारिनय थोद ।।
चानि नावितय दय छु तारन त लोलो । मसा...
व्यथानस मंन्ज़ आयी समाधि ।
अमि खुत क्या दियि हो दय शादी ।।
प्रणवय यथ वुशचारन त लोलो । मसा...
सत गुरसंज दया यस न आसी ।
सुर्कति मुकल्योव यम फांसी ।।
कंजिल्यन छु पोश सारन त लोलो । मसा...
सूहम त्रोव छोन सू जोपुय ।
योथ तोष प्येठ मन म्योन नुपय ।।
सुय तार दियि आबदारन त लोलो । मसा...
वन्द कर सीर पनुन प्रगठ मो कर ।
करियुस प्रगठ तस हो छि थर थर ।।
राज़ मरतब निशि गिरन त लोलो । मसा...
'गुव्यन्द' सोरुय छुय गूव्यन्दय ।
दुय त्राव गूव्यन्दअ छय च्य द्रय ।।
जोल नस अमि लोल नारन त लोलो ।
मस कर्य अस्य चानी कुनरन त लोलो ।।

सन्त कथा (द्वितीय भाग)

195 स्वभावस पननिस तिम ज़ाँह न आवन।
दिवन सुख सारन्य योद दुख ति प्रावन।।
196 तिम्य गय साध यिम निर्वास्ना छुय।
तिमन सोरय पनुन ज़ुव भास्नीय छुव।।
197 करिथ अष्टांग योगय ज़्युनमुत मन।
तव्य दोपम्य लग्य भो सन्त चरणन।।
198 सतुक भाषन दोह्य छुय तिम करन्यि।
तिहिन्दे दरशन्य दोख छुय हरेनीय।।
199 तिमन च्येथ थिर सपिदमित निर्वासय।
तिहिन्दे नज़रि मंन्ज़ नय द्वैत भासय।।
200 छि: निर्भय लोभ रोस्तुय मोह रोस्तुय।
करन निष्काम काम्ये प्रेमी सोस्तुय।।
201 महा उत्तम मनोरथ धीर वाण्य।
छि: निर्मल चित्त सन्त शोभायमान्य।।
202 तिमन निश छय तोता निन्दया बराबर।
तव्य दोपमख कृपा कर व्यन कृपा कर।।
203 सेठया तरनुई सख्त संसार सागर।
अख करनोव तारय सन्त सतगोर।।
204 स्येठा छिम टेऽयठ सन्त तय साध सथज़न।
मेय तिहुन्दुय लोल क्यिथ छुय न्युमुतुय मन।।
205 भू छुस यथ बुरजिह वारे थऽव्रथी कन।
न ज़गतस मंन्ज़ न अकाशस बु वातन।।
206 अमा वोतुस भु भक्तेयन मंन्ज़ मनसिय।
त्वेय दोपम्य चि़ जल गच्छ दर्शनसिय।।

207 मेय यस दर्शुन दितुय तस सन्त रुपय ।
अगर वुच्छन छुः संन्थय छुय प्रत्येक दय ।।
208 यच्छा यस आस स्याने दर्शनचिय ।
गच्छिन संन्थन निशे वुच्छि मेय सु गोरि ।।
209 छुन्य स्यान जाय व्येकुन्ट नय छि कैलास ।
छुस्य आसन भु तति यति छिय स्यान दास ।।
210 उदास्य दास आसन छुस उदासिय ।
मनन तिहिन्देयन अन्दर छुय स्योन वास्य ।।
211 वनुस गोरिये ति क्याह विनक्येन ति कांह छाह ।
मेय तिहिन्दय दर्शनिच स्यठा छि: कांख्या ।।
212 स्येठा गोम पऽदि प्रेम क्या वन्य बो ।
वु चान्येन सन्थन्य चरनन हो लगयो ।।
213 शम्भू नाथन वनुस कऽत्या ति विनक्येन ।
यच्छया यलि छय ति पख कर तिहुन्द दर्शुन ।।
214 तुजिन गोरि ति ह्यथ वोतुय तपोवन ।
लोगुस हाविणि दूऽरे साध सथ जन ।।
215 गंगा बठिस्य प्यट वुच्छ तिमौ ज़िह साध्य ।
उच्छिन गंगय ज़लस त्राविथ प्रमाध्य ।।
216 उच्छिन सुय सिद्ध दाऽरिथ सिद्धासन ।
जितईन्द्रेय उपकारिय निर्वासन ।।
217 बनिनि लेऽज़ शम्भूहस कुन पानि गोरि ।
दियीव तोह आज्ञन्या मेय ही प्रभु जी ।।
218 अमिस साधस करय भु इऽमतिहान्य ।
चि छुक संन्थन हुन्दुय महिमा थ्यीकानीय ।।
219 उच्छय बो सत असत छा चोन वनुनय ।
छि: त्या यिम तिथ ज़ि केंह ह्यक थ्यकबिथय चि पनुन्य ।।

220 शम्भू नाथन दपुस अच्छा स्येटया जान ।
परीक्षया बलि कऽरिण छेय कोनि करान ।।
221 यि साध्य छुय सिऽद्धि परोपकाऽरय ।
स्यठया चालुन अमिस स्यठा छुः अऽरिय ।।
222 अमिस पननुय गरज़ कॉह् न ख्याऽलिय ।
अमिस्युन्द नाव छुय दीन दयाऽलिय ।।
223 युथुय दिविऽय बूज़ कोर बयुच शरीरऽय ।
दिच्चिन वोठ मन्ज़ गंगाय बच्छ सो यीरय ।।
224 कोरन्य आखतऽय खसिनुक वोपाई ।
गगाये मन्ज़ सु साधस कुन हा प्राऽई ।।
225 वुच्छित छरटि छरट सु दिच् सिन्ज़ साधनय वोद ।
वुछिन बेइखत्यारय गो वोथित थोद ।।
226 दिथिऽय थफ साधनऽय खोरुय बठिस प्येट ।
दिच्चिऽन साधस अथस टोफ बेयि दिचयन वोऽठ ।
227 युथय साधन वुछुय प्यो मंन्ज़ गंगाय ।
दुभारय खोरन्य कम्रि प्रेम माय ।।
228 युथुय खोरुन तिथुय तेऽम तोरनस दन्द ।
अथस साधन तिथ्यु लयज वोथनि दुरगन्ध ।
229 हनिथ्य गो साधस्य अथि तथ वीछिस दग ।
दुखनि लोगस्य तमिस पान्य ति रग रग ।।
230 शम्भू आव रफ बदलिथ वोनुन साधस ।
हतो मूर्खो चि् प्रेमिय छुख करान कस ।।
231 म खारुन ब्युच योहय छुय जहरि बऽरथिय ।
अमसिन्ज़ेय टोपि सीत गच्छक मऽरथय ।।
232 अमेसुन्द छुय स्वभावय दन्द चेय तारुन ।
हतो सिद्धो चिय् क्या गोय बोठ मि खारुन ।।

233 छुनुस फिरित यि साधन ओरि असुना ।
स्वभावय त्राव नि एयम त्यलि क्या भु त्रावा ।।
234 अेम सिन्दुय स्वभावय प्रथ कँसि चोप दयुन ।
छुह सादि सुन्दय दयायि नि पथ हयुन ।।
235 पर उपकारस दियि प्राण तान्येथ ।
युस आस्य साध तस्य निश छः न कान्ह कथ ।।
236 त्रिभारय लायन्य बिच मंन्ज़ ज़लस बोठ ।
युथुय साधन बुछय तप्म खोर जट पट ।।
237 करुऽन पर्वाय कँह दादयुक न अथिकुय ।
दयाबानन हुन्द वुच्छ क्युथ स्वभावय ।।
238 टिकन दोरुय हा दीवीयि रूप पननुय ।
चरनन प्यट पेयस हेयोतनस वनुनूय ।।
239 भि छस गोरी गयस खोश कँह चि मेय मंग ।
मंन्गुस साधन दोहय संतन हुन्दुय संग ।।
240 स्यठा गयि खोश सो दीवी दयुतनस दर्शुन ।
वुछित साधन स्यठा हयोतन्य न हरशुन ।।
241 दित्युस दर्शुन शिवन तय साध खोश गौ ।
चरनन प्यट वदहवुनि भावि वियन प्यौ ।।
242 त्वता लौग करणि परने भावि सान्य ।
ति बुज़िथ खोश स्पुद शिव शक्तिमान्य ।।
243 दपुस शिवन्य चि कोणि कँह मंन्गान्य ।
मन्गुस साधन दितम मेय भक्तिदान्य ।।
244 ही दयि चानि प्रेयम खोति क्या ।
संत तय समागम खोति क्या ।।
245 मन्गुन भगवन छुम कीवल ।
हृदय बोध म्यान करति निर्मल ।।

246 शीतल निष्कल शमि खोति क्या । ही दयि...
247 ज्ञन्यान स्वरूप्य रूप हावतम ।
हृदयुक पम्पोश फोलरावतम ॥
248 ओं आं उच्छिनाव ओमि खोति क्या । ही दयि...
249 ज़न्म ज़न्म आसून चोनुय दास ।
खोश आस चोपारय मेय चिय भास ॥
250 कास्तम मुह ठोर ब्रह्म खोति क्या । ही दयि...
251 करि चान्येन चरणन हुन्द ध्यान ।
तथ अन्दर कर लय म्योन मन प्राण ॥
252 दिम दान संतय क्रम खोति क्या । ही दयि...
253 भनन्य तिय वनन द्रायि शिव त शक्ति ।
भनन्य जन्म जन्मय सान भक्ति ॥
254 वनुस शिवन इथ्य छि: साध सारय ।
तव्य वोनमय लगव बो पारय पाऽरय ॥
255 उच्छुन पानय कमन वनन छि: साधय ।
चलिय यी शख करख मा व्यन चि वादय ॥
256 दोपुस दीविय वयन है पछ वारह आयम ।
मनस मन्ज़ पैदि सपदयोम ज़्यादि प्रेम ॥
257 गयस खोश व्यन लगख वौ पारय पाऽरय ।
मे हावतख टयेट पननिय साध सारिय ॥
258 अस्यविने मुखह राज़ कुमारीय ।
वोथुय तस प्रेमि सीत ओश धारि धारय ॥
259 शिवन दोपनस उधय सपुद चेय लोलय ।
वनिनि लोग गोरिये तस धन्य धन्य ॥
260 स्यठा गौ मंन्ज़ हरशस शिव शंकर ।
नचिनि लोग ताल मारण सुय दिगम्बर ॥

261 दोपुस गोरिय मि साधन वन चि केंह न मोंग्न ।
अमिय क्याज़े मन्गुय साधन हुन्दय संग ।।
262 मोन्गुन परिलूख यरिलूख न मुक्ति ।
चेय नय कोन्थस मनजिन केवल भक्ति ।।
263 बजर क्या ज़ोन अयम अथ मंन्ज़ ति वेनतौ ।
वनुस शिबन्य अच्छा वन्य चि कन थो ।।
264 प्रेयमस हिवुय न क्युनि छुय रस त ज़ोरय ।
प्रेम यस तस स्वतह् स्येद मेलि सोरुय ।
265 छुः भक्ति मार्गय स्येठाह् सुगम ।
छुः नय सु केंह ज्ञान योगय खोति सु कमय ।।
266 प्रेम यस पूर सूय मन्ज़ूर सपनुय ।
हतय गोरि उत्तम प्रेम छुः मंगनुय ।।
267 प्रेम परमात्मा छुय सोन ज़ुवीय ।
दोयुम काँह् चोज़ नय छुः प्रेमस हिवय ।।
268 प्रेम यस तस सु भगवथ अथि आवय ।
प्रेम यस तस तमना वारय द्रावुय ।।
269 प्रेम यस तस तोता करन्य छिः यमय ।
प्रेम यस तस चोलुय सोरुय यि गमय ।।
270 प्रेमस युथ सरुरय त्युथ नि कुन्ये ।
प्रेम यस तस छुः दय ब्रोन्ट कन्ये ।।
271 प्रेम भण्डार नावय तथ छुः शिवुय ।
प्रेमऽय सारऽन्य हुन्दय छु ज़ुविय ।।
272 प्रेमऽय छुय खिचान भगवानसय मन ।
तव्य भक्ति मगान्य सन्त सथ ज़न ।।
273 स्याठाह् राधायि ठोऽठ ओस कृष्ण भगवान ।
कथा तिहिन्ज़य वन्य छख़ा थविथ ध्याण ।।

274 युथुय गच्छि लोल आसुन गच्छि मंगनुय ।
प्रेमय सीत मन प्राणऽय रन्गनुय ॥
275 वनुस गोरिय वन्यो छस बु थविथ कन ।
थविथ छस सावधान्य और कुन मन ॥
276 सदा शिव जी वनिनय लोग ही भवानिय ।
प्रेम यमिनय तिमय गैऽय टेयऽट मेऽयनिय ॥
277 कृष्ण भगवान ओस मंन्ज़ दवारिकाय ।
विन्ती कोरनस दोहि अकि राधिकाय ॥
278 दियिव तोह् आज्ञन्या मथुरायि गच्छहा ।
यच्छा छम मे तति वुच्छिहा बि लीला ॥
279 मगर या तोह् यियोव न ति ह्यकि न गेच्छथी ।
चेय रोस्त अकस्य खयनस नय ह्यकि भो धऽरथी ।
280 वनुस श्री कृष्ण भगवानन अच्छा गच्छ ।
बि छुस चेय मन्ज़ मनस चेय सीत थौ पच्छ ॥
281 युथुय वुजुन करिथ प्रणाम सु दराये ।
प्रेयमि सान्य सो मंन्ज़ मथुरायि आये ।
282 करिय तस गोपियोव नालि मुऽति ।
करिनि लज़ि पानवान्य प्रेम ह्यति ॥
283 हेयथ आयस रुखमनिय दोध ब्रोन्ट कुन्य ।
दितुन तोत दोध तमिस राधाय चोनुय ॥
284 युथुय तमि राधिकाय तोत सु दोध चोव ।
हृदयस युस मंन्ज़ सु एकदम वातथ्य पयोव ॥
285 तमि दोह द्वारकाय आयि रुखमन ।
लजिय शामस मलिनि कृष्णस सु चरणन ॥
286 युथुय लेज़ मलिनि पादन बसति वुच्छिनऽस ।
लजिय प्रच्छने अम्युक कारण सु कृष्णस ॥

287 बनुन कृष्ण महाराज दस्त वस्थय ।
यि किथि किनय चरण कमलन खचिवि वस्तय ।।
288 वनिन्य लोग रुखऽमन्ये श्री कृष्ण भगवान ।
अम्युक कारण वन्य टाठिह चि थोव ध्यान ।।
289 छुस्य रावायि टाठुय ज़ुव खोतय बोज़ ।
चे तोत दोध चावमुच राधा हत्य बोज़ ।।
290 तमिस हृदयस अन्दर छुय म्यान पादय ।
मठुय न ज़ाँह्ति तस प्रथ सात्य यादय ।।
291 दित्युथ तोत दोध तमिस यामथ तमेय चोव ।
सु म्यानय चरनन्य प्येट त्यथ्यो प्यो ।।
292 मेह खच़मिच्य भस्ति छम त्वेय चरणन ।
यि बुज़िथ आश्चरस गयि सु रुखमन ।।
293 यिथय पाठ छिय तसिन्द पाद मन्ज़ मनस मेय ।
छुह क्यित म्योन तस प्रेम नय चेय खब़र छेय ।।
294 यि बूज़िथ पच्छ नि रुखमणि आय वारय ।
अनुय तमि तोत दोधय करिथ दुबारय ।।
295 दित्युन श्री कृष्ण भगवानस सु त्येम चोव ।
परीक्षा करणि बापत तुज रुखमणि दोव ।।
296 तिथुय मथुराय मन्ज़ वाच़य सु दोरान ।
वुछन रांधाय खचिऽमचि वसति खोरान ।।
297 स्येठा शरमिन्दः गयि फीरिथ सो आये ।
शरण कृष्णस गयि सो मंन्ज़ द्वारकाये ।।
298 प्रेमस ज़ोर वुच्छतोव कूत छुह आसन ।
युथुय प्रेमय है म्योन्य क्या छुः दासन ।।
299 अवय सन्थौ मोन्गुय संन्थन हुन्दय संग ।
वन्य अथ प्यट कन्य थौ बौज़ प्रसंग ।।

300 महा पुरुषय अलौकिक ओस साधा ।
मनोज़्येथ ओस सिद्ध आसिस समाधा ।।
301 त्रकाल दृष्टिय औसमतुय सुय ।
तस हिन्ज़ीय अख कथा अथ प्यट वन्य भुय ।।
302 पकान ओस अकि दोहे वति प्रेम सान्य ।
दयस प्रेमिय मंगान्य बेयि गेवान्य ।
303 उच्छिन पऽति पऽति पकानय पानस मनुशा ।
उच्छिन पापिय तमिस तस पाप दशा ।।
304 महा क्रोधि कुटिल लोभी ति दम्बय ।
दया आयस लोगुस सुय साध वुच्छनेय ।।
305 दपुस साधन हता टाटया गच्छक कोत ।
चि पख मेय स्यीत करौ कथ ब्ययी वनय ह्योत ।
306 चेय जनमस यिथ कोरमुत छुय न केंह जान ।
वनय कोताह चेय छय रन्ग रन्गय हान ।।
307 वनुस दुष्टन यि फीरिथ पख चि पानस ।
दमय यत्येन ध्युनय क्या भगवानस ।।
308 थ्यकन यलि छुख ति तलि भा त्यलि मे वन्तम ।
मेय मरनुऽय प्याठ किथि कमि दोहि नियेम यम ।।
309 करिस संन्थन दयाये हिन्ज़ नज़रय ।
करुऽय ताम नज़रि तमि तस पनुन असरिय ।
310 तिथ्यी दुष्टस मनस मंन्ज़ उपध्याव ।
तमी विज़िह दुष्टन्य सोय दुष्ट बोध त्राव ।।
311 विनति करनस त महाराज ज़ोलि तुलि बीय ।
छुः विनक्यन सख्त गरम थोकमयुत छुखुई चीय ।।
312 दिचन साधन सो जूली कथि करनीय ।
पकन केंह दूर गई लोल भरनीय ।।

313 दपुस साधन गच्छित सत दोह मरनुय चेय ।
गच्छि मऽल बन्द हेयय अनजल खरुन चेय ।।
314 करिय कलि दोद कालय यलि पकिय रथ ।
तिथुय गच्छि जाननुय व्यन मेय छिः हेय्न वथ ।।
315 दपुस साधन करय व्यन भु चेय उपकार ।
मगर यादिय थेवज़ि यी वारिः कन दार ।।
316 स्येठा यमकंकर तिम चेय यिन्य ।
स्यठा हीय कष्ट चेत्र पीडा दीथ्य निन्य ।।
317 अमा यलि वातखय निशि धर्मराजस ।
करन यम दूत हाज़िर चेय निशे तस ।।
318 वनन तिम धर्म राजस ओन महा दुष्ट ।
महापापी महाकामी महा भ्रष्ट ।।
319 करिय यम राज़ि तामथ चेय नज़रऽय ।
फटन आरखय वोथिय पानस चेय थरय ।
320 चित्रगुफतस वनिय अधि धर्मराजय ।
वुछुय येम सिन्ज़ छिः क्या सोक्रय ति कोक्रय ।
321 चित्रगुफत्य बही मिच़रावि उच्छि चोन ।
यि कोरमुत जगतस्य मंन्ज़ याद थोव मयोन ।
322 यि कोरमुत आस्थीय तीय लेखि सोरुय ।
अधर्मय वुच्छि अति लिखित चोपऽरिय ।।
323 चित्रगुफत वुच्छिय करि त्राह त्राहे ।
छिः दुष्टन पाप कऽरमित जाय जाये ।।
324 योह्य अरज़ीय सु यलि दियि धर्मराजस ।
परिथ सु यस अदि गच्छि कूपस ।।
325 यऽमिय राज़ि ऋष्नय अथि दियि तथ ।
महाराज वाति क्या दुष्टस यमिस यथ ।।

326 उच्छन अन्दः कुन तिम ऋष्य जान पाठय ।
बिहिथ छिऽय कुरसियन प्येट दयि टाठय ।।
327 ति लेखन तथ अमिस वातन नरूऽय ।
धर्म राज़स कुनुय पिलिनाविन्य सुय ।।
328 निशान्य तथ करिथ अदः वनि सु दुतन ।।
नियून्य नरकीय यि जल्द नरकस ।
329 युथुय तिम चेय हेन्य ततिनस कडनुय ।
चि निरज़यख न हरगिज़ गच्छि वदोनुय ।।
330 चि पान्य मारथ्यि दिज़ि मुशत्य कलस ।
वेन्यज़ि क्या अख धर्म ति ना मेय दिलस ।।
331 मेय ज़नमस पथ करुम ना केंह ति धर्मय ।
ज़रूरी आस्य काँह न ति काँह सुकर्मय ।।
332 महाराज अति यि वुच्छतो बेयि वारय ।
दया करतो अनाथस प्येट दुबारय ।।
333 वुच्छिव नय त्येलि भि येतथ्य पान मारय ।
कन्यो सीतिन कलस करि पार पारय ।।
334 करज़ि हट हरगिज़ युथ पथ न फेरख ।
तुलज़ि शोरिय मलज़ि खाखय ति दिज़ि करख ।।
335 तिथुय हट करज़िह युथ सारिय गच्छन तन्ग ।
अगर शराकव सीतिन चटिन्य चेय अन्ग अन्ग ।।
336 निन्य खखरे दिन्य चेय कूरि चंजे ।
स्यटा किस्मौ किन्य दिन्य चेय बोड भय ।।
337 गच्छन यलि तंग उच्छन अदिः बेयि दुबारय ।
चित्रगुप्तोय बही अदः वुच्छिति बारय ।।
338 वुच्छि बेयि अदः अकिस अन्दस यि लिखित ।
छुह साधस पति यि पोकमुत जनमस यीथ ।।

339 सु साधय ब्रोन्ट ब्रोस पति यिह पकान्य ।
तस हिन्ज़े पकनि ब्रास गरदई वोथान्य ।।
340 सो गरदी बीठ ब्रमिस बुथसीय ति नेत्रन ।
गरदि तथ लेगमितीय ब्रास संत चरण ।।
341 दोयुम तस सोत कोरमुत ब्रेम छुह भाषन ।
त्रेयीम प्रेम जूल तुजमिच् हिन्ज़ यि संन्थन ।।
342 युथुय पोन्य ब्रम छुः कोरमुत ज़नमसीय यीथ ।
धर्म राज़स कुन्य पिलिनावि लीखिथ ।।
343 यमिराज़य वनिय गोडि भूग ब्रुठयुम ।
चि् केरज़स हठ वेनज़स गोडि मे यीय दिम ।।
344 तुलज़ि कृकनाद मारज़ि पान मेय क्या गोव ।
महाराज मैति यिय कोरमुत तिय मेय दीतो ।।
345 स्यठा हट करज़ि वात्य भु योततास ।
चि नय पननिस हटस हरगिज़ हेज़्यख पथ ।।
346 उच्छक यालि मेय तुलुन गच्छि ज़यादि शोरय ।
तिथुय युथ लूख येम सुन्द केन्ह न सोरुय ।।
347 मे न्य युन तोर व्यन यमि चान्य बापत ।
चि् थो सत मोकलावथ तति रटय कथ ।।
348 बि यिथि पाठ ज़ानह मोकलावथ चि् तत्ये ।
करान कथि तिम यिमय ब्रास वत्य वते ।।
349 ब्रमिस दुष्टस पद्ध न्य वारह ब्रायस ।
ब्रमय ज़ोन खोशगपा हियु ब्रथ वोपायस ।।
350 यि गच्छि जूनी तुलयन ब्रवय वनन छुम ।
ब्रमिस न ति म्योन क्या सनेह ननन छुम ।।
351 वनुन सादस रटयो जूल भाव मेऽयदान ।
ब्रमिय हित्य तपारिय चोल सु बोड गान ।

352 गराह प्रारयोस साधन ज़ोन चोंलिय ।
वनुन पानस स्यदिस क्या करि होलय ।।
353 वनुस गोरिय यि तोवि पति क्या सप्दुय ।
सु पापी कोत ग्याव किथि पाठ मुऽदुय ।।
354 यि संन्थन बोन ति तस क्या बनेऽवा ।
वनुस शिवन तिहुन्द फेरन वनुन छा ।।
355 ति न्य ज़ाह् वनि ज़ि संन्थन हुन्द बचोन्य ।
छिः नय फेरान अगर ब्रह्मा नचयनीय ।।
356 वनुस गोरिय यि कथ वनतम मे वारय ।
स्यठाह् लेऽज़ करनि शिवस ज़ारि पारय ।।
357 शिवन दौपनस सु पापी आव गऽरय ।
करिनि लोंग शेयमि दोह् सु अरिसरय ।।
358 कोरनस दोद सपदुय मऽल तस बन्द ।
कलस त्युथ दोद कोरनस गोस अनज़ल बन्द ।।
359 सतिमि दोहि ज़लय किन पकुस रथय ।
करनि लोग हाय पेयस याद कथय ।।
360 मगर याद रुदस्य सोरुय समागम ।
तिथय पाठय प्राण केडह्यस आयतस यम ।।
361 यि साधन तस वन्याव आस तीय बराबर ।
स्येठा पीडा लगिस दिन्य यमि कंकर ।।
362 युथुय वातनोव्य निशि धर्म राज़स ।
बन्यो तति तिय चोलुय नीरिथ यि साधस ।।
363 धर्म राज़न विच्छत तस करुन त्रास्य ।
ऐरक रुमो किन्य द्रास कम्पन चा़स्य ।
364 वनुय संन्थन यिय तस तीय हाल गुज़रयोस ।
करुन क्या गच्छि ति यादय साध सुन्द पयोस ।।

365 युथुय दूतव हेतुय तत्ये कड्न्य ।
हेतुन पान मारनुय ज़ोरय वदुन्य ॥
366 स्यठा लोग करणि ज़ऽरी तूलुन केकिनाद ।
न्येवर केख गयि पकन ओरय छुः अख साद ॥
367 थमयकेंकर वुच्छित तस चेऽल चूरे ।
खस्थि आव सिरिय हिव ज़ऽन सु पुरे ॥
368 प्रचण्ड प्यो तीज़कुय तस्हुन्दय चोपारय ।
वोथित थोद गय ऋषि यीम राज़ि सारिय ॥
369 प्येस चरणन प्येठी कोरहम प्रणामय ।
करन तिम कामि आस त्रावेख तमामय ॥
370 चरन छेलहस ति पूज़ करिख पादन ।
यि क्या केकिनाद येत्य ओस प्रुछुक साधन ॥
371 वनिति कोरहस ऋष्यो भेयि धर्मराज़न ।
वुच्छमुत यूथ न अज़ताम काँह दुरज़न ॥
372 महाराज़ यि महापापी अखा छुह ।
दपान पुन्यफल दीयुव गोडि मेय हु क्या छुह ॥
373 दला युथ काँह न अजतामथ मेय टेऽकरयो ।
अमय असि सारिन्य महरा फिरुन थौ ॥
374 दपुक सांधन छि: क्या कथ वारह वेनतो ।
यि क्याजे पान मारन क्या अमिस गौ ॥
375 धर्म राज़न वनुस महरा यि दुष्टय ।
महा पापी अधर्मी पूरि भ्रष्टीय ॥
376 अमी ज़नमस यिथ कोर केंह न धर्मी ।
अमीय कोरमुत छुह प्रथ जायि कोकर्मय ॥
377 सिरिफ अख पोन्य कोरमुत एम छुः ज़नमस ।
मंगानिय गोडन्येथी फल तथ छु पानस ॥

378 दपुक साधन यि दीतोस क्या छि: कथ्य ।
यछ्या यलि छस ति गोडन्येथ बूगि तथ्य ।।
379 धर्म राज़न ऋष्यन अथि दिच् सो अरज़ी ।
महाराज वाति क्या अथ छवि यि मरज़ि ।।
380 ऋष्यो कड सुमरती मूजूब लयुखहस ।
येन्दिर गच्छि चोन छयन बननुय यि कैय यस ।।
381 छु: वातन अथ पोन्येस यति यीय ति दियतोस ।
धर्म राज़स ऋष्यन हुन्द मानुनुय प्योस ।।
382 निशान्य कोर तथ प्यट धर्मराजन ।
तिथुय हाज़िर सपद देव दूत दवन ।।
383 दपूक साधन मेय अमिस छम वनिन्य कथ ।
दियुव तोह् अज्ञन्या बोज़नस अमिस तथ ।।
384 अमेय पति तस कनस तल वनुय साधन ।
युथय नेरख तिथुय दिज़ि वेष्नारपन ।।
385 यिमय दीव सीत अथ कॅह हावन्य चेय ।
यन्द्रस थोद तुलन बेहनावन्य चेय ।।
386 चि हरगिज़ यिनि बेहक गधि पेठय ।
देपज़िह अर्पन शिवस दिच् मेय यि जठय ।
387 रुज़िह योह्य संकल्प थाविथ अन्दवन्दय ।
करज़ि दान्य थोवज़ि अच्छ चि बन्दय ।।
388 भि येत्य आसय करज़ि वातिथ चि बेयि शोर ।
मेन्गज़यख फल अम्यकुय गच्छि करुन ज़ोर ।।
389 धर्म राज़य वन्येख नकस नियून्य ।
चि वेनज़यख क्या मेय कोरना काँह ति पोन्य ।।
390 मेन्गज़्यख सुय ति त्राविज़ह पान येतन्येस ।
करुन गच्छि ज़ारपारय धर्मराज़स ।।

391 करुथ युथ हठ ब्रोन्ट तोव खोति ति करज़येख ।
बु नखय ज़ान वालून चि़ न डरज्येख ।।
392 यि बूजिथ दीववुय न्यू सीत पानस ।
यि न्य खोतुख दप्योहस खस ब्यमानस ।।
393 लगिस तिम हावन्ये यिम देवता छुय ।
नेथिर मिच़राव स्वर्गंय लूख वुच्छ चिय ।।
394 यि लोग वनन्ये ज़ि वेष्नारपन करुव मेय ।
दपूस दीवव यिय भोग क्या गोयी च्येय ।।
395 छुनुक इन्द्राज़ि गदि प्येटय तुलथ्य ।
दोपहस इन्द्र गदेय प्येट बिहिवय ।।
396 दिच्यन दान इन्द्रपदवीय सारि सान्य ।
गच्छिथ चोर चिह़ अनुय दीवौ टिकान्य ।।
397 रटयु दीतव निवुय निशि धर्म राज़स ।
धर्म राज़न वनूख न्युन गच्छि यि नकस ।।
398 दिच़स दौतोव किल्य ह्योत हेय कडोनय ।
तम्य त्रोव डाम्ब ह्योत जोरय वदोनुय ।।
399 वुछुयुस व्यन कह पि वोनख धर्म राज़न ।
वनुख फीरिथ वुछित्र पोन्य म्यान दुष्टन ।।
400 मे भूगा कंह स्वर्गीय छिवि कौनि वुच्छन्य ।
बिच्छनि रोस्तय मेय निर्कस क्याज़ि निवन्य ।
401 महाराज बिच्छुत्र यथ अन्दरिय हाय क्या गोम ।
करन मा आमहिव प्रथ कांसि यिछय काम ।।
402 धर्म राज़िन अदालथ गयि मेय मालूम ।
दया किच्छ तोहः छि आसन गो मेय मालूम ।।
403 यि हाल गो मेय वेयन क्या आसि हालय ।
यिमो कोरमुत स्येठा रुत छुख क्या हालय ।

404 मलिथ सूर खाख पानस तुलन ककिनाद।
अमि पति धर्मराज़स वनिनि लोग साध ॥
405 अनाथस प्येट दया गच्छि राज़: करनीय।
दया करिव अदि: ह्य यिह च्वान गुण गेवनीय।
406 मेय वनतम दुखयन क्या वोन विरुधय।
उच्छुय यी ऐम वनुय खस्यन्य चेय क्रुधय ॥
407 अमि सुन्द बोज़ वुच्छ यीय कर चि व्यन बोध।
चि छुख राज़ राज़न हिन्च चेय सोध ॥
408 मंगन यी छुह न कह दितस चि पननुय।
चि गोखा राजि़ छुय गोभन चेय दिनुय ॥
409 धर्म राज़न यि बूजि़थ बेयि कनस कोश।
हेयतुन क्रुदस अन्दर प्योन बरिथ रोश ॥
410 बहेहुक सिर्य ह्यु मोख साधस्य गौ।
नज़र राज़स करिन पम्पोश नेतरौ ॥
411 दपुस साधन करय यमि लूकस्य डास।
चेय छेयना केंह खबर यि म्योन छुय दास ॥
412 वनुख तामथ उच्छन अोसुस तमाशा।
करन किच्छ छुव अदालथ चिय करख क्या ॥
413 करा वयन राज़स्य चानिस तलुक प्येठ।
यि बुजि़थ धर्म राज़स चायि नठ नठ ॥
414 युयुय वुच्छ धर्म राज़न साध तेज़ गौव।
चित्रगुफतस अथे त्येऽम जल्द उच्छनौव ॥
415 चित्रगुफतन वुच्छित वुच्छ प्यऽन चोपारय।
अमिय दान दितमित स्वरगिक चीज सारय ॥
416 कोरमुत विष्णारपन अमय छु: सोरुय।
अमिय अज़ाब कोरनय न केंऽसि योरय ॥

417 चित्रगुफतन यि लिखित धर्मपाजस ।
करुन कागज हवालय थोद बोथित तस ।।
418 धर्म राजन परिथ कोर धन्य धन्य ।
कोरमुत युथ न अज़ताम केन्सि पुन्य ।।
419 दितुन ऋष्यण अथ्ये व्यन बात्य क्या यथ ।
ऋष्यो ल्योख ब्रह्म लोक व्यन वात्य ध्योन यथ ।।
420 धर्म राजन करुस पननुय निशान्य ।
न्येभर गय दीव हाज़िर ह्यथ विमानय ।।
421 धर्म राजय वनिनि लोग दीवनय कुन ।
अमिस संन्थय अनुग्रह पूरि सप्नुन ।।
422 न्यून यि पुन्यवान्य ब्रह्म लूकस ।
अमिस नय काम कॉह जगतस त शोकस ।।
423 करुस साधन इशारय गोडि यि योरिय ।
भु गच्छि छारुन तत्ये गोडि यमि भि तोरिय ।।
424 चि यिनि मऽसतिय बहक गोडि गच्छि बु छारुन ।
मेऽय भेयि ति केन्ह छुम तति च्चे गारुन ।।
425 तमिस बुष्टस पापुक देह वसिथ प्यो ।
बनिथ तेज़य उडयो ब्रह्म लूकसय गो ।।
426 दोपय दिबिय यि बन्तम वारह पाठय ।
कराव्य क्या अमि पति ऐम चान टाठय ।।
427 कराव्यु क्या ब्रह्म लुकस मंन्ज़ गच्छिथ त्येम ।
कराव्यु क्या तेऽम वन्याव क्या साधस्य ऐऽम ।।
428 यच्छा छम बोजनिछ बनतम यि वारय ।
स्यठा शिवस करिनि लयज़ ज़ारिपारय ।।
429 कल्यानुक युस ज़यानुक छुय समन्दर ।
असान भसान लगुस बनिन्य सु शंकर ।।

430 सु संन्थय कॅह काल पति ब्रह्म लूकसय गो ।
अकिस खयनस अन्दर तोत वातथ्य प्यो ॥

431 पुन्यवानन याम डयूठय सु साधय ।
दबानिय यिथ परन प्यो रटन पादय ॥

432 वुच्छन शेष्यन्य वनान आत्मज्ञयनीय ।
पुन्यवानस क्यऽन थो चिति ध्यानय ॥

433 न सुक्षम छु: स्थूल कारण शरीरय ।
तोह्य आकाशवथ पूरण गम्भीरय ॥

434 न छिवि ज़ीब ईश दीह आदि मन त बुद्धि ।
तोह्य अनुभव पात्र नित्य शुद्धिय ।

435 तोहिय छ्रवि त्रर्ण अवस्थायन अतीथ्य ।
गेवान छिवि तुहिन्दि ज़ुवकुय वीद गीथय ॥

436 तुहुन्दय ज़ुत्र छुह परमय शिव छुस नाव ।
सदा संसारकुय तोहि मंन्ज़ छु अभाव ॥

437 तोहेय छिवि असिति भान्ति प्रिय रुपैय ।
शिवय ज़ानिव तुहुन्द ज़ुव छु भोय मोय ।

438 तोहिय छिवि नित्यमुक्त सर्वस्व ओंकार ।
छुह सोनुय ज़ुव शिविय शिवस्य नमस्कार ॥

439 बनिनि लेऽग वुज़ेयि तिमन्य दया पूरि पाठय ।
तमिय शारिय मोकलाव म्यान तेम्य टाठय ॥

440 बनिथ ज़ीवनमुक्त तिम योर न फीरिब ।
यमिस बोज़ होश सू ब्यऽन तवय तोर नीरिब ॥

संन्थन लगयो भु पार पारय ।
प्रेमी सीत भोरहस वाह वाह वाह ।।

धन्य धन्य संन्थय चरनारबिन्दन्य ।
मन्जूर कोरहस वाह वाह वाह ।।

धर्मय कर्मय क्रयायि रोस्तुय ।
ओरय हा वोरहस वाह वाह वाह ।।

अस्तोति करति गोबिन्द चि़ ति सतगोरन्य ।
भवसिर तोरहस वाह वाह वाह ।।

ओंम परथ्यि ज़वर ज़ीर हावथ्य ।
ब्रोन्टकन्य पोरहस वांह वाह वाह ।।

समाप्त



